

22/07/2025

राजस्थान का आधुनिक इतिहास

जॉर्ज थॉमस - Ireland

→ यह आयरलैंड का रहने वाला था।

apna sapna money money

→ यह मराठों का भाड़ाबली सेनापति था।

→ इसने जयपुर, बीकानेर तथा उदयपुर पर आक्रमण किए थे।

* → 1800 ई. में इसने पहली राजस्थान के लिए राजपूताना शब्द का प्रयोग किया था।
↓ (लिखित में)

→ पुस्तक - Military memoirs of George Thomas
(टाफे / संस्मरण) (his early diary & personal diary)

→ 1805 ई. में William Franklin ने इस पुस्तक को प्रकाशित किया था।
Taffy by by - गाफबुवाड (बड़ोदा) ← (5 लोगों की team थी, व्यथाम - पेशवा)
(भोसले (नागपुर) प्रोजेक्ट मेराठा)
(होलकर (इंदौर) सिंधिया (जवानियर) (पूना)

(Ray में घूम-घूम कर स्थानीय की लिखी)

कर्नल जेम्स टॉड - Scotland
(जॉन की जाना) (लौकिकी)

1785-1782
1803-06
1817-18

रॉबर्ट ब्रॉल
सेनापति (जॉन)
नाइट बरोनेट
(पुस्तक) (जाना)
(परम गीत)

→ अंग्रेजों ने इसे होलकर सिंधिया (जवानियर) की सैनिक सेवा में भेजा था।

→ अंग्रेजों ने इसे पश्चिमी राजपूत राज्यों का political agent बनाया था।
(political agent of western Rajput States)
Map बनाता था

यति - जम मुनि

→ HQ - Udaipur (1818-22)

→ गुरु - यति ज्ञानचन्द्र

→ इसे छोड़े वाले बाबा के नाम से जाना जाता है।

→ इसने पहली बार हमारे ^(Raj) प्रदेश के लिए राजस्थान या रायधान शब्द का प्रयोग किया था।

हॉड → (पहला व्यक्ति जिसने Rज की his book) (साधु)

→ गौरीशंकर हीराचन्द झाड़ा के अनुसार यह राजस्थान के आधुनिक इतिहास के लेखन का जनक था (father of modern his writing of Rज)

→ हॉड ने संस्कृत, फारसी तथा राजस्थानी स्रोतों का प्रयोग किया था।

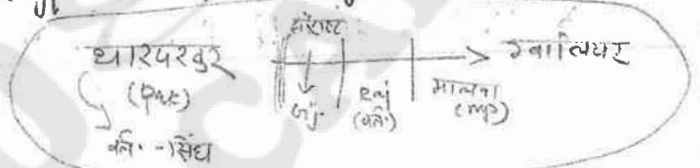
→ भैरवशेखर झाड़ा इसका परसंगीत स्थान था। (Chhatra)

→ पुस्तकें -

① The annals and antiquities of Rajasthan

OR

Central and Western Rajput States of India



यह पुस्तक England के राजा George-IV तथा William-IV को समर्पित की गई थी। (dedicated)

→ यह पुस्तक ② भागों में प्रकाशित की गई थी

↳ Ist part → published - 1829

→ इस भाग में राज. का भूगोल, राज. की सामंती व्यवस्था तथा मेवाड़ के इतिहास का वर्णन है।

→ IInd part → 1832 - प्रकाशित किया गया

↳ इस भाग में Rज. की अलग - अलग रियासतों का इतिहास मिलता है।

जैसे - मारवाड़, बीकानेर, सिरोही, जैसलमेर, जाम्नेर, झुंझी, डोरा

23/07/2025

→ मृत्यु - 1835

② Travels in western India

जॉर्ज सी मृत्यु के बाद पुकाशित

↳ पुकाशित - 1839

- यह पुस्तक William Hunter द्वारा की पत्नी को समर्पित की गई थी
- यात्रा ज्ञानचन्द्र का भी उल्लेख
- इस पुस्तक में राजपूत संस्कृति, आदिवासी जीवन, अंधविश्वास, मंदिरों तथा मूर्तियों की जानकारी है।

Q. 14/12
अ. 14/12

- 29 Sep (1803) ई. को ^(I) भरतपुर महाराजा रतनसिंह ने अंग्रेजों के साथ संधि कर ली थी।
- 14 Nov (1803) ई. को ^(II) झालार महाराजा बख्तावर सिंह ने अंग्रेजों के साथ संधि की थी।
- इस समय लॉर्ड वेलेजली अंग्रेजों का गवर्नर जनरल था।
- 9 Nov 1817 ई. को करोली के राजा हरप्रसाद ने अंग्रेजों के साथ संधि की थी।
- 26 Dec 1817 ई. को कोरा के राजा उम्मेद सिंह ने अंग्रेजों के साथ संधि कर लेना है।
- (1818) ई. राज. की अन्य रियासतों अंग्रेजों के साथ संधि कर लेती हैं।
- इस समय लॉर्ड हेस्टिंग्स अंग्रेजों का गवर्नर जनरल था।
- इन संधियों के दौरान चार्ल्स मेल्हॉफ अंग्रेजों का प्रतिनिधि था।
- झुंझपुर बांसवाड़ा तथा पुतापगढ़ रियासतों के साथ संधियों के दौरान जॉन मैल्डम अंग्रेजों का प्रतिनिधि था।
- 11 Sep 1823 ई. को सिरोही के राजा शिवसिंह ने अंग्रेजों के साथ संधि की थी। [खु. की अन्तिम रियासत]
- इस संधि के दौरान मलेम्जेडर स्पीयर्स अंग्रेजों का प्रतिनिधि था।

We are just friends

अंग्रेजों के साथ

संधि करने के लिए

राजस्थान के राजा

अंग्रेजों के साथ संधि करने के लिए



↳ इस समय लॉर्ड एमहर्स्ट इंग्लैंडों का गवर्नर जनरल था।

- पुल्येड रियासत में एड इंग्लैंड अधिडारी नियुक्त किया जाता था जिसे political agent / Resident कहा जाता था।



• डेविड आम्हर्स्टलोनी

↳ यह प्रथम Resident फॉर Rajasthan था।

→ HQ - Delhi

→ 1832 ई. में अजमेर में (सक) (Agent to governor general) मुख्यालय स्थापित किया गया था

→ Abraham Jokeet Raj. का 1st A.G.G. था

→ 1845 ई. में A.G.G. मुख्यालय आबू में भी स्थापित किया गया था। (हामी)

→ 1864 ई. में Ajmer तथा A.B. में छह-छह महलों की व्यवस्था की गई थी।

24/07/2025

→ राज्यों की सुरक्षा के लिए इंग्लैंडों ने सेनाओं का गठन किया था

1822 - Kota contingent → देवली (Tonk) (लोडदेवली)

1822 - Mewara Battalion → ब्यावर (be aware) (बुर्जल डिक्सन ने बताया)

1835 - Jodhpur legion → एरिनपुरा (Pali)

1835 - Shekhawati brigade → सुन्दर (मेजर डाउनिंग (सन - एंगुलान डाउनिंग))

1841 - Mewar Bhil corps → खैराबाद (Udaipur)

(Ajmer, Jodhpur, देवली में जाते - पूरे पार करने थे इस लिए इंग्लैंडों ने यहाँ सेवानों को भी डिप्युटी के साथ भेजा)

→ डोंगेजों ने राजस्थान में बई रियासती का गठन किया था।

↳ जैसे - धौलपुर - 1806



बवालियार

सिद्धिया का क़ाब्र (मक़बरा)

टोंक - 1817

सालावाड - 1838

(ख़ास से बलग़ बुरहे)

उममेद सिंह गुमनोर

लालिम सिंह साला

समय

शेख़ रियासत की

समीर आ पिकारी
(अंग्रेज़ों के पास
चला गया)

होल्कर की रथों वाली

जमीन डोंगेजों

ने हल्ला दे दी। ← बई रियासत

ने हल्ला दे दी।

1857 की क्रांति ## कारण - चर्बी वाले कादूस

→ क्रांति के दौरान राजस्थान में अंग्रेजों की छह सैनिकी छावनियाँ थी।

↳ नसीराबाद (Munirabad) - 28 May

नीमच (M.P.) - 3 June

देवली (Raj.) - 5 June

* एरिनपुरा (Pali) - 21 Aug

व्यावर

खैरवाड़ा (Udaipur)

29 March
गोलीचलायी
अंग्रेजों पर
(विद्रोह)

(मोहन पाण्डे)
गिरधर + 8 अप्रैल को कोली

24 अप्रैल → मेरठ छावनी
→ 90 फौजियों ने कार्टूस use करना शुरू
(85 जनों में)
→ तोप से अंग्रेजों का विद्रोह

दिल्ली - मुगल बादशाहले
11 मई मुलाकात की
(मतलब, मतलब, इस, फिर)

[19 मई - खसर आखिरी छावनी]

→ व्यावर तथा खैरवाड़ा छावनियों में सैनिकों ने क्रांति में भाग नहीं लिया था।

→ क्रांति के दौरान General Patrick Lawrence राजस्थान का M.G.G. था।

→ नसीराबाद छावनी के कैप्टन स्पीय द्वारा कॉलोनी में अधिवृत्त सीलिंग (पेंडल सेना)

↳ 28 May को 15th Bengal native infantry के सैनिकों ने क्रांति की शुरुआत की थी।
(इसे छूड़ चुकित)

→ इन्होंने अंग्रेज अधिकारियों को मार दिया।

जैसे - कर्नल न्यूबेरी, कैप्टन स्पोर्टिसवुड

→ दो अंग्रेज अधिकारी घायल हो गए थे।

↳ Lt. Lock & Capt. Hardy

बाकी बचाव जारी था

(विद्रोहियों) → 28, 29 & 30 जून को
कर्मल पैन्नी की हत्याघात से मृत्यु हो गई थी।

→ 30th Native Infantry भी क्रान्ति में शामिल हो गई।
तथा सारे विद्रोही दिल्ली की तरफ चले गए थे।

→ 15 वीं Bengal Native Infantry को अजमेर से
नसीरबाद भेजा गया था। अजमेर की सुरक्षा के लिए
व्यावर से Mehwar Battalion तथा डीसा European
Battalion (जंग) बुलाई गई थी।

Colonel
Lieutenant

2 June - क्रान्ति के समाचार पढ़े

जिसकी आवाज गानगी उसकी जगहों हानगी
Ball pen की सौगंध हुई cancel

→ नीमच ← नीम चरी

↳ मोहम्मद अली शेख नामक सैनिक ने कर्नल एबॉट के सामने
अंग्रेजों के प्रति वफादारी करने से मना कर दिया था।
की प्रतिज्ञा

→ 3 June को हीरासिंह के नेतृत्व में सैनिकों ने अंग्रेजों के
खिलाफ क्रान्ति कर दी।

→ शाहपुरा के राजा लक्ष्मणसिंह ने विद्रोहीयों की सहायता दी।
(नीमच → Chittor → श्रीनगर → पालपुरा) केनी

→ देवली छावनी की महिपुर बगलिथन क्रान्ति में शामिल हो जाती हैं तथा सभी विद्रोही दिल्ली की तरफ चले जाते हैं।

→ नीमच छावनी के 40 अंग्रेजों ने इंगला नामक गाँव में रूघाराम बिसान के पास शरण ली। (फॉरम)

↳ मेवाड़ का Political Agent (PA) शॉवर्स इन्हें उदयपुर लेकर आता है।

→ महाराणा हवससिंह ने इन्हें जगमोहिनी महल (Jagmohini) में रखा था।

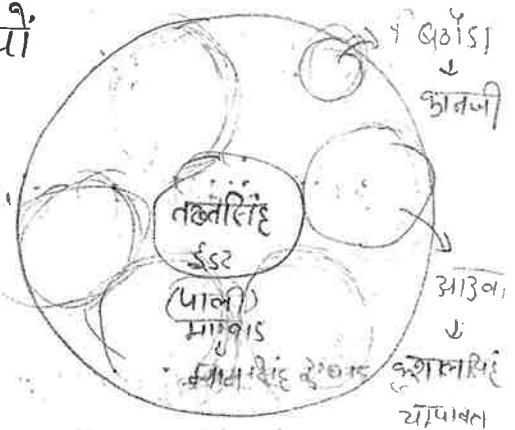
→ एरिनपुरा

(पूर्व सेना के निवास - 1847)

↳ 21 August को पूर्विया सैनिकों ने आखिरी में क्रान्ति की तथा अंग्रेज अधिकारी हॉल के घर पर हमला कर दिया था।

→ विद्रोही एरिनपुरा आए तथा अपने बाड़ी साथियों के साथ इन्होंने दिल्ली की तरफ जाने का फैसला किया।

→ अखा (Akh) नामक स्थान पर विद्रोहियों की मुलाकात आठवा के मामलत कुशलसिंह चम्पावत से हुई तथा कुशलसिंह ने इन्हें नेतृत्व प्रदान किया।



25/07/2025

8

→ विठोडा का युद्ध - 8 Sep. 1857

Capt. Mithcoat + कुशलराज सिंघवी v/s कुशलसिंह चम्पावत
(Jvpr) +
+ कलेश सिंह (भारा भाग्य)
एरिनपुरा छावनी के फौजी

→ इस युद्ध में कुशलसिंह की जीत हुई

→ जोधपुर का डोनाड सिंह पंवार इस युद्ध में लड़ता हुआ मारा गया था।

लॉरेन्स के समानाचार मित्र

(Pvpr) "काले-गोरे"
→ चैलावास का युद्ध - 18 Sep. 1857

जॉर्ज पैट्रिक लॉरेन्स + माउड मेसन v/s कुशल सिंह चम्पावत
(A.G.G.) (P.M.) भारा भाग्य था + एरिनपुरा छावनी के फौजी

→ इसे काले गोरे का युद्ध कहा जाता है।

→ इस युद्ध में भी कुशलसिंह की जीत हुई।

→ माउड मेसन को मार दिया गया था।

(देखा) लक्ष्मी दे सामावत
→ भाउवा के बाबूगार्दनलडा की फौ

(Pvpr)

→ आडवा का युद्ध - 20 Jan. 1858

कर्नल हॉम्स + हंसराज जोशी v/s कुशलसिंह चम्पावत
(Jvpr) (एरिनपुरा फौजी X)

→ 23 को सहायता प्राप्त करने के लिए कुशलसिंह मेवाड़ चला गया था
अतः हृत्कीसिंह लाम्बिया ने युद्ध का नेतृत्व लिया
कुशलसिंह का भाई

५ इस युद्ध में अंग्रेजों की जीत हुई

५* 24 Jan 1858 ई. को अंग्रेजों ने झाड़वा पर अधिकार कर लिया था तथा सुगाली माता (माडवा) की मूर्ति उठाकर ले गए।



- यह काले संगमरमर की मूर्ति है जिसमें सुगाली माता के 10 सिर व 54 हाथ हैं।
- अंग्रेजों ने इसे सजमेर के राजपूताना म्यूजियम में रखा था लेकिन कालान्तर में इसे पाली के बांगड़ म्यूजियम में रखा गया था।

→ मेवाड़ में सलूमबर (ठिकाना) के देशरिसिंह तथा ठोठरिया (Rustam) के जोधरसिंह ने कुशालसिंह को शरण दी थी।

→ 8 मियू 1860 ई. को कुशालसिंह ने बीमच में आत्मसमर्पण कर दिया था।
(अंग्रेजों की छावनी)

→ कुशालसिंह की जांच के लिए टैलर कमीशन बनाया गया था

→ कुशालसिंह का अन्तिम समय Unk में बीता था।

1864 ई. में यही पर कुशालसिंह की मृत्यु हो गई थी।

बाद में इनका सूप झाड़वा का सामन बना

→ कवि गिरकरदान के अनुसार झाड़वा का संघर्ष 'माजारी का संघर्ष' था

→ माखड़ा के अन्य सामन्तों ने भी कुशालसिंह का साथ दिया था

↳ मारवाड़ इलाक़ा
जिन्होंने कुशलसिंह
का साथ दिया

शिवनाथ सिंह - आसोप (Jwpr)

अजीतसिंह - आलणियावास (Ngr)

बिशन सिंह - गूलर (Ngr)

"चलो दिल्ली भागो फिरगी"

→ 10 Oct 1857 ई. को शिवनाथसिंह (आसोप) के नेतृत्व में विद्रोहियों ने दिल्ली की तरफ़ जाने का प्रयास किया था।

↳ इन्होंने रेवाड़ी पर अधिकार कर लिया था।

↳ 16 Nov 1857 ई. को नारनौल (HR) के समीप अंग्रेज़ अधिकारी गोराई ने इन्हें हरा दिया था।

कुशलसिंह की
सेना
+
हरिनपुरा
को जियो के
साथ दिल्ली
गए थे।
10 Oct 1857
↓
रेवाड़ी (HR)
↓
नारनौल - गोराई
(16 Nov) काजित
उरनाई

नाथ लॉरे

(Jwpr की सेना)

→ खड्डू नामक स्थान पर शिवनाथसिंह ने 35 दिनों तक अंग्रेज़ों का सामना किया था।

→ अजीतसिंह तथा बिशनसिंह डाकू बन गए थे।

→ रूपनगर (Rjnsmd), लसानी (Rjnsmd) तथा आसीन्द (Bhailwpr) के स्वामान्तों ने भी कुशलसिंह का साथ दिया था।

• तख्तसिंह → जॉन लुडलो नामक अंग्रेज़ अधिकारी ने इसके राजतिलक स्मारक में भाग लिया था।

↳ यह क्रांति के दौरान माखाड़ का राजा था

→ मिर्जा की सुरक्षा के लिए इसने कुशलराजसिंह की सेना के नेतृत्व में सेना भेजी थी

↳ 1870 ई. में इसने गवर्नर जनरल (G.G.) लॉर्ड मेयो के अजमेर दरबार में भाग नहीं लिया था।

• फानजी

↳ यह बिर्छोड़ा था सामान्त् था लेकिन कुशालसिंह चम्पावत ने इसकी हत्या कर दी थी।

• मॉरिसन

↳ मॉड मेसन की मृत्यु के बाद इसे मारवाड का P.M. बनाया गया था। (कार्यवाहक)

(आइवा)

→ शक्ति के केन्द्र - 1. सुगाली माता मंदिर

2016 ^{*}prelims 2. कामेश्वर मंदिर (शिवमंदिर)

→ कोरा का जन विद्रोह

महन्त-पुजारी / रियाला-खेना
दार-मालिक

→ 15 Oct 1857 ई. को वहील जयदयाल (मधुरा) तथा रियालदर मेहराब खाँ (कुरौली) के नेतृत्व में कोरा में विद्रोह हो जाता है

→ महाराज रामसिंह II को नजरबंद कर दिया गया था।

→ P.A. बर्टन तथा कुछ अन्य लोगों को मार दिया गया था।

जैसे -

फ्रेंक

आर्थर

बर्टन के पुत्र

सेल्डर

सेविल फॉटम

देवीलाल

डॉक्टर साहब

- महाराज का प्रतिनिधि

2000m - बोडा

7500 - कुल्होड़

15000 - फतेपुरा

→ मधुरेश मंफिर के महन्त बुर्रैयालाल गोस्वामी ने विद्रोहियों तथा रामसिंह II के बीच समझौता करवाया। [9 शर्तें]
महन्त राजा से

→ रामसिंह II ने मेवाड़ महाराजा स्वरूपसिंह से अपने परिवार को उदयपुर ले जाने की प्रार्थना की।

→ कुरौली के महन्तपाल ने रामसिंह II को मुक्त करवाया था

→ 29-30 मार्च 1858 ई. को अंग्रेज अधिबारी राबर्ट्स ने कोरा को पूर्णतया मुक्त करवाया था

→ जयदयाल तथा मेहराब खाँ को हत्यूफल किया गया।
कोरिया जमा बहलाना

→ रामसिंह II को भी फण्डित किया गया था तथा उलबी तोपों की सलामी घरा की गई थी [15 से 11]

→ मदनपाल की तोपों की सलामी बहा ली गई थी। [17]

→ अन्य विद्रोही - हरदयाल जयदयाल का भाई
रत्नलाल
जिथानाल

→ टोंड

↳ नवाब * वजीरुद्दौला अंग्रेजों का समर्थक था

→ विद्रोही - मीर आलम आँ (नवाब का भाग)

→ पहले टोंड में

अहमदयार आँ (निम्बाहेड़ा)

मोहनुद्दीन (पालोद)

→ मोहनुद्दीन ने बहादुरशाह जफर से मुलाकात की थी।

→ अहमदयार आँ शाहजादा फिरोज (मन्सूर) से सम्पर्क में था।
(अन्ति सूर्य)

→ निम्बाहेड़ा में जनता ने नीमच से विद्रोहियों का स्वागत किया था

→ यहाँ पर ताराचन्द पटेल ने अंग्रेज अधिकारी जेक्सन का सामना किया जो नीमच से विद्रोहियों का पीछा कर रहा था।

→ ताराचन्द पटेल को फाँसी दी गई थी।

→ मोहम्मद मुजीब ने नाटक 'आजमाईश' से अनुसार टोंड से विद्रोह में महिलाओं ने बड़ी भाग लिया था।

→ धौलपुर - धौल-भगवान

↳ देवा गुर्जर ने क्रांति की शुरुआत की। (शजा ने दबा दिया था)

→ ^{वहाँ विद्रोह बड़े भागते रहे (आए)} इन्दौर तथा ग्वालियर के विद्रोही धौलपुर आ गए थे।

→ नेता - शिव रामचन्द्र
हीरालाल

→ विद्रोह दबाने के लिए महाराजा भगवतसिंह को पटियाला से सेना बुलानी पड़ गयी थी।

→ भरतपुर

↳ मेव तथा गुर्जर समुदाय ने क्रांति में भाग लिया

→ महाराजा जसवंतसिंह ने अंग्रेज हाथिडरी मॉरिस को भरतपुर छोड़ने की सलाह दी थी।

→ * मेव विद्रोहियों का नेता - * सरुद्दीन
(महाराजगंजी)

→ अलवर ^{विनयसिंह} ^(सूत्यू हो गई) ^{बाप ये ठने} ^{राजा}

↳ महाराजा विनयसिंह तथा महाराजा शिवरामसिंह अंग्रेजों के समर्थक थे।

→ * आगरा की रक्षा के लिए महाराजा विनयसिंह ने अपनी सेना भेजी थी, लेकिन * अछूनेरा नामक स्थान पर विद्रोहियों ने इस सेना को हरा दिया था।

→ दीवान ^(विनयसिंह) फैजुल्ला खान विद्रोहियों का समर्थन करता है।

→ जयपुर - रामसिंह P.N. - ईडन

↳ P.N. ईडन के कहने पर महाराजा (रामसिंह - II) ने विद्रोहियों को गिरफ्तार कर लिया था।

→ विद्रोहि - सादुल्ला खाँ
उस्मान खाँ
विलायत खाँ
लियाकत खाँ

→ अंग्रेजों ने रामसिंह - II को सितार - ए - हिन्द की टपाधि एवं कोठपुतली परगना दिया था।

→ सामोद ^(जयपुर) के शिवसिंह ने रामसिंह - II को बहादुर शाह ^{मुल्ल बाफ़ाह} जफ़र से मुलाकात की सलाह दी थी।

- इंडो-ब्रिटिश युद्ध के फलस्वरूप अली खान ने मुगल बादशाह की सहायता की थी।

→ बीकानेर

↳ बीकानेर महाराजा सरदार सिंह ने ^{दिल्ली के पास} बाडमे (MR) नामक स्थान पर पिटोह को दबाया था।

* → यह राजस्थान का एकमात्र राजा था जिसने अपनी रियासत के बाहर जाकर अंग्रेजों की सहायता की थी।

→ अंग्रेजों ने इसे ^(Munab) टिहरी परगने के 4 गांव दिये थे।

• अमरचन्द बागिया

↳ मूल रूप से बीकानेर के रहने वाले थे।

→ क्रान्ति के दौरान ^{झांसी में क्रान्ति से प्रभावित} झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की सार्थक सहायता की थी। अतः उन्हें क्रान्ति का मामला कहा जाता है।

→ अंग्रेजों ने उन्हें फाँसी लगा दी थी। [राज के 7^{वां} शहीद]

भारत में क्रान्ति के 2 नेतृत्व → मुगल बाद. बादशाह जहाँ (शाहजहाँ)

• तांत्या टोपे ^{सामो का सेनापति} नानासाहेब पेशवा / धूधूपं (बाजीराव II का बेटा)

↳ क्रान्ति के दौरान 2 बार राज हुआ था

[Aug 1858, Dec 1858]

→ सबसे पहले मांडलगढ़ आते थे

→ दुआड़ा का युद्ध - 13 मियू 1858
(13/11/1858)

↳ अंग्रेज अधिकारी रॉबर्ट्स ने तांत्या तोपे को हरा दिया था।

(Rajmnd)

→ रकमगढ़ का युद्ध - 13 मियू 1858

↳ अंग्रेजों ने तांत्या तोपे को हराया

→ कोठारिया के जोधासिंह ने इस युद्ध में तांत्या तोपे की सहायता की थी।

→ शलायता (झालावाड़) नामक स्थान पर झालावाड़ के राजा पृथ्वीसिंह ने तांत्या तोपे के खिलाफ सेना भेजी थी।

↳ सेना को कामगार कटालिया व इफनेलाप मिलाया

↳ गोपाल चलरन को छोड़कर बाकी सेना ने तांत्या तोपे के खिलाफ लड़ने से मना कर दिया।

↳ तांत्या तोपे ने झालावाड़ पर अधिकार कर लिया तथा पृथ्वीसिंह को उसे 5 लाख रुपये देने पड़े।

→ 11 Dec 1858 ई. को तांत्या तोपे ने बोंसवाड़ा रियासत पर अधिकार कर लिया था। इस समय लक्ष्मणसिंह बोंसवाड़ा का राजा था।

(शेड बेरोडा)

→ पुतापगढ़ में मेजर शेड ने तांत्या तोपे को हराया

↳ इस समय फलपतसिंह पुतापगढ़ का राजा था।

→ जीरापुर का युद्ध-

(अबेना भादमी द्वारा)

→ कर्नल लेसेन ने तांत्या गोपे को हराया

5/1/1857

कुआड़ा

रमकुमराव

शलायता

जीरापुर

दोसा

सीवर

→ दोसा का युद्ध

→ शॉवर्स तथा होर्न्स ने तांत्या गोपे को हराया

→ सीवर का युद्ध

→ कर्नल हॉम्स ने तांत्या गोपे को हराया

→ तांत्या गोपे के 600 सैनिकों ने बीडानेर के

सैनिकों को काली नदी में डुबाने की कोशिश की। महाराजा सरदारसिंह के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।

(तांत्या का कैद)

→ मानसिंह के विश्वासघात के कारण ब्रिटेन ने तांत्या गोपे को नरवर के जंगलों में गिरफ्तार कर लिया था।

→ 18 मई 1859 ई. को शिवपुरी (MP) में तांत्या गोपे को फांसी दे दी गई थी।

→ शॉवर्स ने राज. कांसों का विरोध किया था।

→ पुस्तक - A missing Chapter of the Indian
(लुप्त अध्याय) mutiny
(विद्रोह)

तांत्या गोपे के राज. में समय 3

→ गोबू के नासिर मोहम्मद और तांत्या गोपे की सहायता की थी।

600 कोजिओं
को बनाया

→ Bkndh महाराजा सरदारसिंह ने तात्या तोपे को
10 घोड़सवार सैनिकों की सहायता दी थी।

→ सलूमवर के केसरीसिंह तथा दुठारिया के जोधसिंह
ने तात्या तोपे को शरण दी थी।
(घर के बाहर घाई लगाने रखे थे - जो अंग्रेजों के खिलाफ केसरीसिंह के दरबार में खड़े थे)

• जोधसिंह ने कई अन्य विद्रोहियों को शरण दी थी

↳ जैसे - पेशवा बाना साहेब

शिव साहेब (कानना साहेब के भाई)

भीमजी चारण - डाकू

गंगापुर में अंग्रेजों को लूट लिया

• राधोदास मामड द्विवे ने सलूमवर के

केसरीसिंह की प्रशंसा की थी।

अंग्रेजों के सामने खड़े नहीं

29/07/2025

• नाथूराम अडगावत - पुस्तक - 'Rajasthan's role in the struggle of 1857'

• प्रिचर्ड - 'Mutinies in Rajputana'

• मोहन सिंह मेहता - 'Lord Hastings and the Indian states'

• चार्ल्स मैटफॉर्ड राजस्थान की रियासतों का परिचय बनाना चाहता था

- मराठों के खिलाफ राजस्थान के कई राजाओं ने अंग्रेजों से सहायता प्राप्त की कोशिश की थी,

जैसे - पृथ्वीसिंह [Jp8] - 1776 ✓

विजयसिंह [Jvp8] - 1781 ✓

प्रतापसिंह [Jp8] - 1786 ✓

• वॉल्टर थोमस - 1869 गांधीजी वेदा इट

↳ अंग्रेज अधिकारी वॉल्टर के अनुसार राजा महाराजाओं के विद्यों के लिए अलग से school व colleges होने चाहिए।

1875 ई. में रिचर्ड गॉर्ड (लॉर्ड मेयो) ने अजमेर में Mayo College की स्थापना की

→ 1869 ई. में अंग्रेजों ने शांभर झील पर अधिकार कर लिया था। इस झील पर जयपुर तथा जोधपुर का संयुक्त अधिकार था।

• अफीम बहिषण - 1893 वफादार गांधीजी + एनीबियेंट भारत आई + बिनेयुमंद शिखर गांधी



Springboard
ACADEMY



✧ विमान आंदोलन ✧

→ पहले मेवाड़ रियासत में पड़ता था

विजोलिया आंदोलन (Bhilwara) पृ. 1189-1194

→ विजोलिया मेवाड़ रियासत का प्रथम क्षेत्रीय ठिकाना था।

→ राणा सांगा ने अशोब परमार को यह ठिकाना दिया था।

→ अशोब परमार ने खानवा के युद्ध में भाग लिया था।

→ आंदोलन के कारण

1. 84 प्रकार के कर

2. अधिक भू-राजस्व

3. लाटा-फुन्ता
बालर से मनुमान

4. बैंगार - जबरदस्ती काम बखाना

5. चंवरी कर - 1903 ई. में कृष्णसिंह ने यह कर किसानों पर लगाया था।

• यह कर किसानों की लड़कियों के विवाह के समय लिया जाता था।

6. तलवार बंधाई कर - यह कर नर सामान्य द्वारा राजा को दिया जाता था।

• लेकिन 1906 ई. में पुष्पीसिंह ने कर किसानों पर लगा दिया था।

(3) चरणा

प्रथम चरण - (1897-1914)

↳ डाक्टु किसानों ने गिरधरपुरा नामक गाँव से आंदोलन चालू किया था।

→ साधु सीतारामदास के बुद्धने पर नानजी पटेल तथा डाक्टु पटेल किसानों की समस्याएँ लेकर मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह से मिले।

→ हामिद को जाँच अधिकारी बनाया गया

→ पहले चरण में किसानों को अधिक सफलता नहीं मिली

→ स्थानीय नेताओं द्वारा आंदोलन चलाया गया था

↳ जैसे - येमचन्द भील

फतेहपुरा चरण

ब्रह्मदेव

दूसरा चरण (1916-23)

↳ 1916 ई. में साधु सीतारामदास तथा महानलाल शर्मा के साथ विजयसिंह पण्डित वस झाँझ आंदोलन से जुड़े।
(सुप सिंह)

↳ उपरमाल पंच बोर्ड -

↳ स्थापना - 1917, हरियाली समावस्था

→ स्थान - बैरीसाल

संरचना → अध्यक्ष - मन्ना पटेल

→ उपरमाल सेवा समिति का भी गठन किया गया था।

→ उपमाल का डंडा नामक पर्चा प्रकाशित किया था।

↳ इस पर्चे में साधू सीतारामदास 'भगारची' के नाम से लिखते थे।

30/07/2025

→ 1919 ई. में कांग्रेस के अमृतसर अधिवेशन में विजयासिंह पथिक के बुलने पर बालगंगाधर तिलक ने बिर्जोलिया आंदोलन के पक्ष में एड प्रस्ताव रखा था लेकिन गांधीजी ने इसका विरोध किया।

→ 1920 ई. के कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन में गांधीजी ने आंदोलन को नैतिक समर्थन दिया।

→ आंदोलन की जांच के लिए दो आयोग स्थापित किए गए थे।
जांच आयोग

1919

विन्डुलाल भट्टाचार्य (भामोरा)

अमर सिंह (अभिषेक)

अफ्जल अली

1920 - द्वितीय जांच आयोग

राजसिंह वेदला

तख्तसिंह मेहता

इ. माधुलाल मालवीय

→ 1922 ई. में अंग्रेजों के हस्तक्षेप के कारण बिलानों के साथ एड संभारित किया गया।

समझौता - 1922

शॉर्ट हॉलैंड (A.G.)

विलडिंग (P.A.)

(A.G. का सचिव) आगल्वी

राजा मंत्री [उभाधर चरजी
बिहारीलाल

+

मोतीराम
नारायणपटेल

माणिक्य लाल शर्मा

शमनारायण चौधरी

पारा-कुला दया + दोरीनगमा
(भूमि नाम के आधार पर कर)

→ इस समझौते में (35) कर माफ कर दिए गए थे

→ बिजौलिया के सामन्त देसरीसिंह ने इस समझौते को स्वीकार नहीं किया था

तिसरा चरण (1923-41)

→ भूमि बन्दोबस्त अधिकारी ट्रेन्च ने असिंचित भूमि पर कर बढ़ा दिए।

→ 1927 ई. में किसानों ने अपनी असिंचित भूमि सामन्त को वापस लौटा दी तथा सामन्त ने इस भूमि को जब्त कर लिया।

→ 1929 ई. में विजयसिंह पण्डित (तलाक-तलाक-तलाक)
(U.P.) आंदोलन से अलग हो गए थे

→ गांधीजी ने जमनालाल बजाज को आंदोलन के नेतृत्व के लिए भेजा।

→ वज्ज जी ने हरिभाऊ उपाध्याय को आंदोलन का नेता नियुक्त किया।

→ 1941 ई. में मेवाड़ के प्रधानमंत्री वी. शंकराचारी तथा राजस्व मंत्री मोहन सिंह मेहता ने किसानों के साथ सम्झौता करवाया तथा उनकी जख्म जमीनें वापस दी गई थी।

→ अन्य महत्वपूर्ण तथ्य

→ यह राजस्थान का पहला संगठित किसान आंदोलन था।

→ यह विश्व का सबसे लम्बा (44 वर्ष) अहिंसक आंदोलन था।

→ तिलक तथा गांधीजी ने मेवाड़ महाराणा फतेहसिंह को पत्र लिखे थे।

→ अपने ^{वेसरी-मराठी में} मराठा समाचार पत्र में तिलक ने आंदोलन के पत्र में लेख लिखा था।

→ 'पुताप' समाचार पत्र में इस आंदोलन की खबर प्रकाशित होती थी।

→ यह एक 'साप्ताहिक' समाचार पत्र था जो डानपूर से गणेश शंकर विद्यार्थी प्रकाशित करते थे। पण्डित ने चांदी की शर्तों में

→ विजयसिंह पण्डित ने गणेश शंकर विद्यार्थी को चांदी की शर्तों में

गणेशशंकर विद्यार्थी बिजोलिया तथा चम्पारण दोनों आंदोलनों से जुड़े हुए थे। गांधीजी द्वारा आंदोलन

→ उमचंद जी डा. शंभूमि उपन्यास बिजोलिया झांकोलन पर आधारित है।

→ शंकर सहाय सक्सेना
+
पद्मजा शर्मा (W) } → Book - 'बिजोलिया किसान झांकोलन डा इतिहास'

• माणिक्य लाल वर्मा

↳ यह बिजोलिया ठिडाने में नौबरी करते थे लेकिन विजयसिंह पथिक की प्रेरणा से किसान झांकोलन में शामिल हो गए थे

→ किसानों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्होंने 'पंछीड़ा' नामक गीत लिखा था

→ उमाजी का छोड़ा नामक स्थान पर विद्यालय संचालित करते थे।

[विजयसिंह पथिक का गीत - पीड़ितों का पंछीड़ा]

[भंवरलाल जी ने भी अपने गीतों के माध्यम से किसानों को प्रोत्साहित किया था]

• तुलसा भील

↳ विजयसिंह पथिक के समाचारवाहक

• अमरसिंह शणावत

↳ बिर्जोलिया के सामन्त देसरीसिंह का संरक्षक
(अभिभावक)

→ अन्य समाचार पत्र जिन्होंने बिर्जोलिया आंदोलन की खबरें प्रकाशित की थी,

भारत मित्र

अभ्युदय

पद्मा

बेबुलेश्वर समाचार

'देसरी'

(तिलक वाला)

→ कई राजनीतिक संगठनों ने इस आंदोलन का समर्थन दिया था,

जैसे -

जैसे -

1. राजस्थान सेवा संघ

2. राजपूताना मध्य भारत सभा

↳

'भुवानी दयाल' के नेतृत्व में एक जांच
दल का गठन किया गया था

बंगू आंदोलन

↳ बंगू (चिन्तोड़) मेवाड़ रियासत का प्रथम द्रोणी का ठिकाना था।

→ 1921 ई. में मेनाल के भैरूकुंड नामक स्थान से छावड़ी किसानों ने यह आंदोलन प्रारम्भ किया था।

→ कारण -

↳ 53 पड़ार के कर

→ अधिक भू-राजस्व

→ लारा-कुन्ता

→ बेगार

→ नेता - ^(पथिक के मित्र) रामनारायण चौधरी

→ 1922 ई. में अजमेर में विजयसिंह पथिक ने किसानों तथा बंगू के सामन्त अमरूपसिंह चूडावत के बीच सम्झौता करा दिया था।

→ ट्रेन्च ने इसे 'बोल्शेविक सम्झौता' कहा था।

→ मेवाड़ रियासत ने इस सम्झौते को स्वीकार नहीं किया।
अमरूपसिंह को गिरफ्तार कर लिया गया तथा अमृतलाल
को बंगू का प्रशासक बना दिया गया।

गोविन्दपुरा हत्याकाण्ड - 13 July 1923

↳ ट्रेन्च द्वारा किसानों की सभा पर फायरिंग की गई थी इसमें दो किसान शहीद हो गए थे।

↳ *रूपाजी धाबड़
↳ *रूपाजी धाबड़

→ 10 Sep 1923 ई. को विजयसिंह पथिबु को गिरफ्तार कर लिया गया अतः आंदोलन नेतृत्वविहीन हो गया था।

→ 1925 ई. में किसानों के साथ समझौता किया गया तथा (34) कर माफ कर दिये गए।

→ आंदोलन के अन्य केन्द्र - चौखेड़ी
मंठावरी

मेवाड़ के खानसा क्षेत्र का आंदोलन

↳ यह आंदोलन जाट किसानों द्वारा प्रारम्भ किया गया था।

→ अप्रैल 1921 ई. में डूंगरपुर से आंदोलन प्रारम्भ हुआ था।

→ नेता - गोकुल जी

पोड़ोली सम्मेलन - Dec. 1921

↳ सम्मेलन के निर्णय

* आंदोलन को विजयोलिया आंदोलन की तरह चलाया जाएगा।

* अगला सम्मेलन मातृ कुंडिया में आयोजित किया जाएगा। [शज का हरिकार]

मातृ कुंडिया सम्मेलन - May 1922

↓

1. किसानों की अधिकांश मांगें स्वीकार कर ली गई

2. किसानों की ऊफीम की खेती का मुआवजा दिया गया था

22 June 1880 ई. को मातृ कुंडिया के किसानों ने आंदोलन किया था।

^(रियासत) लूंदी / ^(जगह) ठरंड आंदोलन

↳ कारण -

↳ 25 पट्टार के कर

→ अधिक भू- राजस्व

→ लारा - फुन्ता

→ बेगार

→ सूखे कर

→ चराई कर गौचर / चारागाह - सरकारी भूमि

→ भ्रष्टाचार

→ सित्तु 1920 ई. में साधू सीताराम दास ने हाथी किसान
पंचायत की स्थापना की थी।

↳ अध्यक्ष - हरला भंडु

→ सित्तु 1922 ई. में गुर्जर किसानों द्वारा आंदोलन प्रारम्भ
किया गया था।

04/08/2025

→ किसानों ने सरकारी चारागाहों पर अधिकार कर लिया।
तथा सरकारी न्यायालयों का बहिष्कार कर दिया।

→ अन्य गावों में भी किसान पंचायतें स्थापित हो गई -

↳ जैसे - बरड़
बरुधन
गदरड़ा

डावी हत्याकाण्ड - 2 अप्रैल 1923

↳ * इफ़राम हुसैन ने किसानों की सभा पर फायरिंग कर दी थी
तथा इसमें दो किसान शहीद हो गए

↳ नानक जी भील → झण्डा गीत गा रहे थे
देवीलाल गुर्जर

↳ नानक जी भील झण्डा गीत गा रहे थे

↳ नानक जी भील की याद में माणिक्यलाल वर्मा ने
'अजी' नामक गीत लिखा था।

→ नेता - नयनुराम शर्मा - [राज. सेवा संघ के सदस्य]
नारायण सिंह
भूवंरलाल सुनार

1929 में पश्चिम के निकलने पर
→ राज. सेवा संघ के छंद होने के कारण बूंदी आंदोलन समाप्त हो
गया था [1929]

→ 1936 ई. में इस आंदोलन का दूसरा चरण प्रारम्भ हुआ था तथा
इस चरण में सामाजिक सुधार किए गए थे।

हिंदोली सम्मेलन - 5 Oct 1936

↳ हूडेश्वर नामक स्थान पर यह सम्मेलन आयोजित किया गया था।

→ 500 से अधिक मीणा तथा गुरजर किसानों ने भाग लिया था।

→ इस आंदोलन में महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया था।

(शजा-जयसिंह)

अलवर किसान आंदोलन

↳ (I) नीमूचना आंदोलन

↳ कारण - 1. 1924 ई. में राजपूत व ब्राह्मण किसानों पर 50% कर लगा दिए गए थे

2. माफ़ी भूमि को जब्त कर लिया गया था।

3. जंगली सुकरी की समस्या

→ राजपूत किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ किया

→ नेता - माधोसिंह

गंगा सिंह

गोविन्द सिंह

अमर सिंह

→ 'अखिल भारतीय श्रमिय महासभा' ^(Delhi) ने इस आंदोलन को समर्थन दिया था

→ किसानों ने 'पुढार' नामक पर्चा प्रकाशित किया था

→ यह आंदोलन छानपुर तथा थानागाजी क्षेत्रों में हुआ था।

वर्त. (कोठपुतली - बहरौड़)

→ नीमूचना हत्याकाण्ड - 14 May 1925

↳ किसान सभा पर कायरिंग - छाजू सिंह

→ (156) किसान शहीद

अपनी 'Young India' समाचार पत्र में गांधीजी ने इसे दोहरी डायरशाही कहा था

→ 'रियासत' समाचार पत्र में इसकी तुलना जलियावाला बाग हत्याकाण्ड से की थी।

→ ^{राज. सेवा संघ} 'तहसील राजस्थान' समाचार पत्र ने इस घटना को सचित्र प्रकाशित किया था
↳ [31 May 1925]

II मेव बिस्वान् आंदोलन

→ मेव बिस्वान् ने मेवात क्षेत्र में यह आंदोलन बिधा था

→ जैसे - रामगढ़
लक्ष्मणगढ़
बिशनगढ़
तिजारा

→ कारण - आधिक भूराजस्व

- माफ़ी भूमि को जल्द कर लिया गया था

- जंगली सुझरों की समस्या

→ नेता - यासीन खाँ - (गुरुग्राम)

शैखद भीख नारंग

मुहम्मद डली

मुहम्मद हादी

→ धार्मिक संगठनों ने आंदोलन का समर्थन बिधा था।

→ जैसे - अंजुमन - ए - खादिम - डल - इस्लाम
सभ्य सेवक

जमीयत - ए - तखलीग - डल - इस्लाम
सभ्य उचार सुसार

→ आंदोलन में धार्मिक मांगें शामिल की गई थी।

→ जैसे - (i) उर्दू को बढ़ावा दिया जाना चाहिए

(ii) मजिदों पर सरकारी नियंत्रण समाप्त बिधा जाना चाहिए

(iii) सरकारी नौकरियों में मुस्लिमों की संख्या बढ़ाई जानी चाहिए।

→ महाराजा जयसिंह ने एड जांच आयोग का गठन किया

↳ सदस्य - पुर्जन सिंह

गणेशी लाल

गजनाथर डूली

७१६ में पद-जमा गया

→ चासीन आँ दे बुहने पर विद्वानों ने जांच आयोग का विचार कर दिया था।

→ आंदोलन हिंसक तथा साम्प्रदायिक हो गया था

→ विशनगढ़ में सरकारी अधिकारियों पर हमला कर दिया था।

→ तिजारा में सम्प्रदायिक दंगों हो गए थे।

→ अतः अंग्रेजों ने महाराजा जयसिंह को हटा दिया था [1933]

↳ अंग्रेजों ने खिलाफ था

पदों चला गया तथा

वही पर उसी मृत्यु हो गई थी

#. सीकर किसान आंदोलन

(Semi autonomous)

→ जयपुर रियासत के अन्तर्गत सीकर एक अर्धस्वायत्त विभाग था।

→ 1922 ई. में सीकर के सामन्त बुल्याणसिंह ने कुरों में बहोतरी कर दी थी।

कारण: जार किसानों ने आंदोलन प्रारम्भ किया

→ नेता - शमनरायण चौधरी
पधारो महार वस
हरि ब्रह्मचारी

→ सीकर विभाग ने शमनरायण चौधरी के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी।

→ 'नरुण राजस्थान' समाचार पत्र को प्रतिबंधित कर दिया गया था।

→ ब्रिटेन के ^{parliament} House of Commons में इस आंदोलन की चर्चा की गई थी (चैम्बेडलॉरेस एनी हडसन)।

→ London के 'डेली हेराल्ड' समाचार पत्र में आंदोलन की खबरें प्रकाशित हुई।

→ 1925 ई. के पुष्कर अधिवेशन में अखिल भारतीय जार महासभा ने आंदोलन का समर्थन किया।

→ भरतपुर के ठाकुर देशराज आंदोलन से जुड़े।

* → 1931 ई. में जार क्षेत्रीय महासभा का गठन किया गया

→ 1933 ई. में ^(S.K.) पलवाना में जार क्षेत्रीय महासभा का पहला अधिवेशन आयोजित किया गया था।

जार पुजापति महायज्ञ - 20 Jan 1934

↳ ठाकुर देशराज ने संसत पंचमी के दिन इसका आयोजन कराया था।

→ पुरोहित - खेमराज शर्मा

→ यज्ञमान - कुंवर हुकुम सिंह

→ 15 March 1935 ई. को सर छोटूराम चौधरी तथा रतनसिंह ने किसानों के साथ सम्मेलन कराया।

→ 1938 ई. में जयपुर पुजामण्डल ने आंदोलन का ~~समर्थन~~ समर्थन किया।

→ 1947 (जयपुर के P.M.)
दीरलाल शास्त्री
(राज. के 1st मनोनित (M))
टीबाराज पालीवाल
(जयपुर के राजस्व मंत्री)
(राज. के 1st निर्वाचित (M)) } किसानों के साथ सम्मेलन कराया

^(S.K.)
कुराधल सम्मेलन - 25 अप्रैल 1934

↳ 10,000 महिलाओं ने इस सम्मेलन में भाग लिया था

→ बाराण - सोनिया का बास नामक स्थान पर सीधोट के सामन्त मानसिंह ने महिलाओं से दुरव्यवहार किया था

→ अध्यास - विशोरी देवी

→ मुख्य वक्ता - डलमा देवी

क्रान्त हत्याकाण्ड - 25 April 1935

↳ धापी देवी नामक महिला के बुढ़ने पर ब्रिटेनो ने
कुर देने से मना कुर दिया था।

→ Capt. वेब ने ब्रिटेनो पर फायरिंग कुर की तथा कई
ब्रिटेन शहीद हो गए

↳ चेतराम
टीकुराम
लुखाराम
झाशाराम

→ Britain के House of Commons में इस हत्याकाण्ड की
चर्चा की गई थी।

(झुझु)

जयसिंहपुरा हत्याकाण्ड - 21 June 1935

↳ यह पहला ब्रिटेन हत्याकाण्ड था जिसमें हत्यारों
को सजा मिली थी

→ सीकर आंदोलन के नेता

1. सरदार हरलाल सिंह -

↳ 1901 ई. में हुनुमानपुरा (हुनुमुनु) में इनका जन्म हुआ

→ हुनुमुनु में विद्यार्थी भवन की स्थापना की थी जो कि किसान आंदोलन की गतिविधियों का मुख्य केन्द्र था।

2. नेतराम सिंह गोरीर

3. पन्नेसिंह ठाटड़ानाऊ

4. मास्टर चन्द्रभान

5. नरोत्तम लाल जोशी (आधान के रूप में विद्वत्)

↳ इनोंने शेखावती जनता आंदोलन चलाया था

❖ ❖

सीकर तथा हुनुमुनु जिले शेखावती क्षेत्र में सम्मिलित थे, यहाँ फुलवाहा वंश की शेखावत शाखा का शासन था।

• पंचपाने (हुनुमुनु) में 5 ठिकाने

- नवलगढ़
- मंडावा
- हुंडलोफ
- मलसीसर
- बिसाऊ

• अमर सेवा समिति → यह शेखावती का प्रथम संगठन था जिसने राजनीतिक चेतना का संचालन किया था।

↳ स्थापना - मास्टर प्यारेलाल [चिड़ावा] का गांधी]

भरतपुर आंदोलन - 1931

↳ कारण - 1. अधिक भू-राजस्व

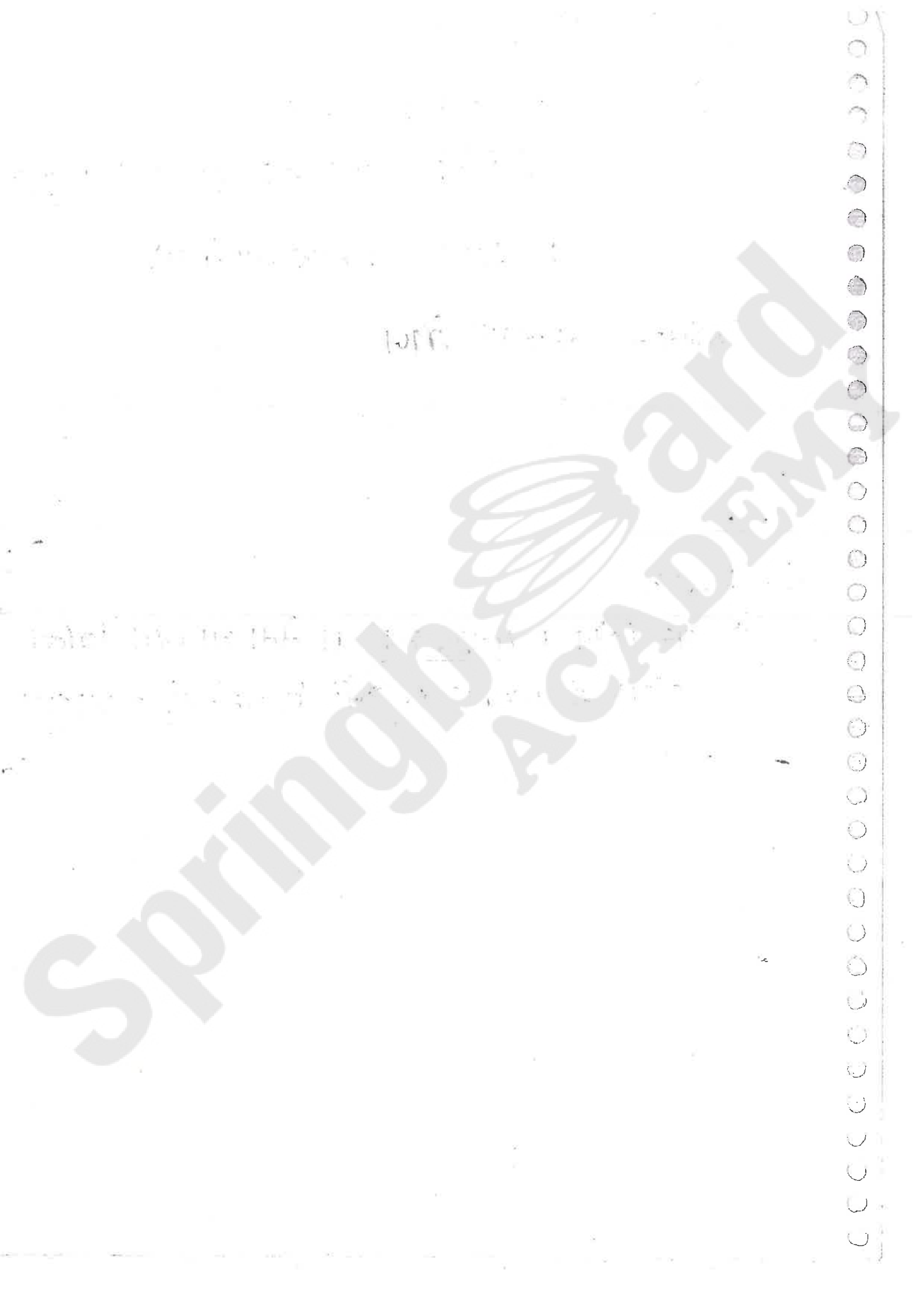
2. शिक्षा, स्वास्थ्य तथा सड़क पर नए कुल्गाए गए थे

3. 1929 ई. की महान आर्थिक मंदी

→ नेता - लम्बरदार भोज

• एनी बेडसन

↳ यह ब्रिटेन के 'मजदूर फ्ल' का नेता था तथा ब्रिटिश संसद में भारतीय किसानों की समस्याएं उठाता था।



✧ जनजातीय झड़ोलन ✧

जनजातीय झड़ोलन

पृष्ठ 10, 11, 12

→ भू-सुधार जनजात

→ कारण - (1) ब्रिटीश शासनकाल के दौरान जनजातीय क्षेत्रों में प्रशासनिक परिवर्तन किए गए थे जिन्हें जनजातियाँ समझ नहीं पायी थी

(2) जनजातियों की स्थानान्तरित कृषि बंद कर दी गई थी

(3) भू-राजस्व अधिक था तथा यह नकद में लिया जाता था अतः जनजातियाँ साहूकारों के चंगुल में फँस गई थी।

(4) जेम्स टॉड ने जनजातियों के डोलार्ड [राजमार्ग कर] तथा खवाली [सुरक्षा कर] कर समाप्त कर दिए थे।

जनजातीय क्षेत्रों की सुरक्षा के लिए नई सेनाओं का गठन किया गया था तथा इन सेनाओं के अर्धे जनजातियों पर डाल दिए गए थे।

↳ जैसे - मेवाड़ झील कोर
मेरवाड़ा ब्रिटिश

(5) जनजातियों की न्याय व्यवस्था में हस्तक्षेप किया गया था

↳ जैसे - मौताना [रक्त मूल्य]

(6) जनजातियों के सामाजिक रीति-रिवाजों में हस्तक्षेप किया गया था।

↳ जैसे - 1853 ई. में मेवाड़ महाराजा स्वरूपसिंह ने 'डाकुन' प्रथा पर शेरु लगा दी थी।

- ⑦ जनजातीयों की महुआ की शराब पर शेरु लगा दी गई थी।
- ⑧ जनजातीयों के वन अधिकार समाप्त कर दिए गए थे।
- ⑨ जनजातीय क्षेत्रों में ईसाई ^(पादरी) मिशनरियों द्वारा धर्मान्तरण कराया जाता था।
- ⑩ 1881 ई. की पहली जनगणना के दौरान कुछ अफवाहों के कारण जनजातीयों में आक्रोश था।

भगत आंदोलन

↳ वागड़ क्षेत्र में गोविन्द गुरु द्वारा यह आंदोलन प्रारम्भ किया गया था।

→ सहयोगी - सुरजी भगत

→ भील तथा डोली जनजातियों ने भाग लिया था।

• गोविन्द गुरु

↳ वेदसा नामक गाँव में एक खजारा परिवार में इनका जन्म हुआ था।

→ यह दयानन्द सरस्वती से प्रभावित थे

→ 1883 ई. में आदिवासियों में अपनी एडुता को बढ़ाने के लिए उन्होंने 'सम्प सभा' की स्थापना की थी।

→ 1903 ई. में मानगढ़ पहाड़ी पर सम्प सभा का पहला अधिवेशन आयोजित किया गया था।

→ 1910 ई. में सम्प सभा ने अपनी 33 मांगों सरकार के सामने रखी लेकिन सरकार ने इन मांगों पर कोई ध्यान नहीं दिया।

→ 1911 ई. में वेदसा आंदोलन का मुख्य केन्द्र बन गया था।

→ आदिवासियों को हिन्दु धर्म में रखने के लिए 1911 ई. में गोविन्द गुरु ने अगत पंथ की स्थापना की थी।

मानगढ़ हत्याकाण्ड - 17 Nov. 1913

→ सम्प सभा के अधिवेशन पर पुलिस द्वारा फायरिंग की गई थी।

→ 1500 से अधिक भील शहीद हुए।

→ इसे 'राजस्थान का जलियावाला बाग हत्याकाण्ड' कहा जाता है।

→ गोविन्द गुरु तथा पूंजा धीरजी को गिरफ्तार कर लिया गया था।

→ 7 वर्ष बाद उन्हें रिहा कर दिया गया था।

→ उन्होंने अपना शेष जीवन काम्बिया (जुं) गांव में शान्तिपूर्ण तरीके से बिताया था।

झालोद (जुं) नामक स्थान पर अपने अनुयायियों को उपदेश दिया करते थे।

→ इन्होंने ईंडर रियासत में भी राजनैतिक चेतना का संचार किया था [1908-1911]

→ 1910 ई. में पालपट्टा के सामन्त के भीलों की 21 मांगों माननी पड़ गई थी।

06/08/2025

गोविन्द गुरु

- गोविन्द गुरु ने आदिवासियों में एक्सेल्वरवाद पर बल दिया था।
- इन्होंने भीलों का नैतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान किया था।
- इन्होंने स्वदेशी का समर्थन किया था।
- यह अहिंसा के समर्थक थे।
- इनका सफेद झण्डा शान्ति का प्रतीक था।
- पंचमहल (गुज.) जिले में इन्होंने गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था।
- गुरु - राजगिरि

^{प्रस्ताव} एंटी आन्दोलन

→ 1917 ई. में गोगुन्दा, झाड़ोल तथा कोरड़ा क्षेत्रों में भील व गरासिया जनजाति द्वारा यह आंदोलन प्रारम्भ किया गया था।

→ यह आंदोलन मातृकुण्डिया नामक स्थान से प्रारम्भ हुआ था।

→ गोकुलजी ने इस आंदोलन को समर्थन दिया था।

→ नेता- मोतीलाल तेजावत

↳ कोल्हारी नामक गाँव में एक मोसवाल परिवार में इनका जन्म हुआ था।

→ यह झाड़ोल ठिकाने में कार्य करते थे।

————— * * *
इन्होंने मेवाड़ महाराणा के सामने (2) मांगें रखी थी जिन्हें मेवाड़ की पुकार कहा जाता है।

————— → (3) मांगों को स्वीकार नहीं किया गया था।

↳ जैसे - 1. वन अधिकार
2. बेगार
3. सुझरों की समस्या

→ धीरे-धीरे यह आंदोलन दूसरे क्षेत्रों में भी फैल गया था

↳ जैसे - वागड़
सिरोही
डूंडर (जं.)
विजयनगर (जं.)

नीमडा हत्याकाण्ड - 7 March 1922
(विजयनगर - गुं.)

- ↳ भीलों की सभा पर पुलिस द्वारा कायरिंग की गई थी।
- 1200 से अधिक भील शहीद हुए
- मोतीलाल तेजावत फरार हो गए थे।
↓
- 4 June 1929 ई. को खेड़वास नामक स्थान पर इन्होंने शक्ति समर्पण कर दिया था।
↓
- 1936 ई. में माणिकलाल ठोठारी के दस्तावेज से 'महाइन्द्राज सभा' ने इन्हें रिहा कर दिया था।
(मेवाड़ S.C.) [गांधीजी ने 'नवजीवन' समाचारपत्र में लेख लिखा]
- मेवाड़ पुजामण्डल के सदस्य थे।
(मोतीलाल)
- मेवाड़ पुजामण्डल के सत्याग्रह में इन्हें गिरफ्तार किया गया था।
- भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरान भी इन्हें गिरफ्तार किया गया था।
- आजादी के पश्चात् इन्होंने अपना जीवन समाजिक कार्यक्रमों में बिताया था।
- इन्हें 'आदिवासियों का मसीहा' कहा जाता है।
- आदिवासी इन्हें 'बावजी' बुलते थे।

सिरोंही का एकी आंदोलन*

- जनवरी 1922 ई. में भील व गरसिया जनजाति द्वारा यह आंदोलन प्रारम्भ किया गया।
- नेता - मोतीलाल तेजावत
- सिरोंही के आदिवासी इन्हें 'मेवाड़ का भांदी' कहते थे।
- ईडर गुजामण्डल ने आंदोलन का समर्थन दिया।
- जनजातियों को सम्मान देने के लिए सिरोंही के दीवान श्रीमान्ते मालवीय ने विजयसिंह पथिक को बुलाया।
- विजयसिंह पथिक ने मोतीलाल तेजावत तथा जनजातियों से मुलाकात की थी लेकिन इसका समाधान नहीं हुआ।

स्थान

सियावा - 12 April 1922

भूला / बालगोलिया

16 May 1922

↳ (3) शहीद -

↳ (11) शहीद

→ 1923 ई. में छोड़र नामक स्थान से मोतीलाल तेजावत ने आंदोलन पुनः प्रारम्भ करने का प्रयास किया लेकिन जनजातियाँ एकी आंदोलन से अलग हो गई।

मीणा आंदोलन

- 1924 ई. में आपराधिक जनजाति अधिनियम पारित किया गया था तथा इसमें मीणा जनजाति को शामिल किया गया।
- 1930 ई. में जरायम पेशा कानून पारित किया गया था तथा इस कानून के तहत पुत्रों को मीणा महिला व पुरुष को धाने में हाजरी लगाना अनिवार्य कर दिया था।
- मीणा जनजाति द्वारा इन कानूनों के खिलाफ आंदोलन प्रारम्भ किया गया।
- नेता - छोटूराम
जवाहरराम
महादेव राम

* 1933 ई. में मीणा क्षेत्रीय महासभा का गठन किया गया था।

मीम आशाना
मीम का धाना सम्मेलन - 1944

- ↳ संत भगन सागर ने इस सम्मेलन का आयोजन किया। इन्होंने 'मीन पुराण' नामक पुस्तक लिखी थी जिसमें मीणा जनजाति का भौतिक, सामाजिक इतिहास बताया गया था।

मीणा सुधार समिति - 1944

↳ अध्यक्ष - *वंशीधर शर्मा (अध्यक्ष)
लक्ष्मीनारायण शरवाल
राजेन्द्र कुमार 'अजेय'

^{Jodhpur}
जागावास सम्मेलन - 28 Oct 1946

↳ इस सम्मेलन में 26000 चोंकीदार मीणाओं ने
अपने पदों से स्विकें दे दिये थे तथा इसे
'मूर्खित दिवस' के रूप में मनाया।

⇒ 1952 ई. में अखिल पेशा कानून समाप्त कर दिया गया था।

मेर विद्रोह - 1821

↳ ^{Meerut} झाँसी नामक स्थान से मेर जनजाति द्वारा यह आंदोलन प्रारम्भ किया गया था।

अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबा दिया तथा 1822 में मेरवाड़ा ब्रिटिश सरकार का गठन कर दिया।

मीणा विद्रोह - 1851

↳ ^{Bhilwara} जैजपुर परगने की मीणा जनजाति द्वारा किया गया था।

→ अंग्रेजों ने इस विद्रोह को दबा दिया तथा 1855 में मीणा ब्रिटिश सरकार का गठन कर लिया गया।

[देवली छावनी]

भील विद्रोह - 1881

↳ ^(उदयपुर) बारापाल नामक स्थान से यह आंदोलन प्रारम्भ हुआ था।

→ नेता - भीमा
खेमा
जोयता

→ ब्रह्मदेव नामक स्थान पर मेवाड़ रियासत ने भीलों के साथ एक समझौता कर लिया।

[कविराजा श्यामलदास जी → मेवाड़ रियासत के प्रतिनिधि]

Springboard
ACADEMY



12/08/2025

✧ पुजामण्डल आंदोलन ✧

⇒ अखिल भारतीय देशी राज्य लोड परिषद्

↳ स्थापना - 1927, बॉम्बे

→ अध्यक्ष - दीवान रामचन्द्र राव

→ उपाध्यक्ष - विजयासिंह पथिक

→ राजपूताना तथा मह्यभारत के सचिव - रामनारायण चौधरी

⇒ राजपूताना देशी राज्य लोड परिषद्

↳ स्थापना - 1928

→ प्रथम अधिवेशन - 1931, झजमेर

→ अध्यक्ष - रामनारायण चौधरी

→ 1928 ई. के कलकत्ता अधिवेशन में कांग्रेस ने रियासतों में उत्तरदायी शासन की मांग की।

↳ इस समय कांग्रेस के अध्यक्ष - मोतीलाल नेहरू

→ * 1938 ई. के हरिपुरा अधिवेशन में कांग्रेस ने पुजामण्डल आंदोलन का समर्थन दिया।

↳ इस समय कांग्रेस के अध्यक्ष - सुभाष चन्द्र बोस

1931	1934	1936	1938	1939	1942	1943
↓	↓	↓				
जयपुर	मारवाड़	बीकानेर	मेवाड़	कोटा	भुवालगढ़	वासवाड़ा
बूंदी	हाड़ोती	दौलपुर	शाहपुरा	बिशनगढ़	(विधान)	
			अलवर	सिरोही		
			भरतपुर			
			बुरोली			

1944	1945	1946
↓		
डुंगरपुर	जैसलमेर	झालावाड़
	पुताभगढ़	

जयपुर

- ↳ 'अर्जुनलाल सेठी' ने जयपुर में सबसे पहले राजनीति के चेतना का संचार किया था।
- 1922 ई. में कुल्याणसिंह तथा श्यामलाल वर्मा ने हिन्दी राजभाषा आन्दोलन चलाया था।
- 1927 ई. में हमरसर (गुप्त) में जमनालाल बजाज ने खलकन्त सोबलाराम देशपाण्डे के साथ मिलकर 'चरखा संघ' की स्थापना की थी।

→ पुजामण्डल - स्थापना - 1931

↳ संस्थापक - कुरुरचन्द पारनी

→ 1936 - जमनालाल बजाज - पुजामण्डल का पुनर्गठन

↓
→ अध्यक्ष - चिरंजीलाल मिश्र

↓
→ सचिव - हीरालाल शास्त्री

→ पुजामण्डल ने शेखावाटी किसान आंदोलन का समर्थन दिया

→ प्रथम अधिवेशन

→ 8-9 May 1938

→ नथमल का कुला (स्थान)

→ अध्यक्ष - जमनालाल बजाज

→ 10 May 1938 ई. को वस्तुशेषा गांधी ने

→ जयपुर रियासत ने पुजामण्डल पर रोक लगा दी।

→ पुजामण्डल ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया

→ जमनालाल बजाज को गिरफ्तार कर लिया गया

* जेन्टलमैन एग्रीमेंट - 17 Sep 1942

मिर्जा स्मथल (P.M.) + हीरालाल शास्त्री (अध्यक्ष)

- शर्तें -
1. जयपुर रियासत संगठनों की सहायता नहीं करेगी
 2. जयपुर रिया. उत्तरदायी शासन की स्थापना करेगी।

3. जयपुर रियासत ब्रिटिश भारत के विरोधियों को गिरफ्तार नहीं करेगी तथा पुजामण्डल उसे शरण दे सकता है।

4. पुजामण्डल शान्तिपूर्ण धर्ना, ब्लूस, पर्शन इत्यादि कर सकता है।

5. पुजामण्डल 'भारत छोड़ो आंदोलन' में भाग नहीं लेगा

आजाद मोर्चा- बाबा हरिश्चन्द्र (नेतृत्वकर्ता)

+ पुजामण्डल के असन्तुष्ट बुद्धिजीवियों ने इसका ठाठ लिया था तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था

→ अन्य सदस्य - रामचरण जोशी
दीनतमल वांडारी
गुलाबचन्द कासलीवाल

आजादी के बाद क्या करें

→ 1945 ई. में नेहरू जी के वृहत् पर आजाद मोर्चा पुजामण्डल में मिला लिया गया था।

- देवी शंकर त्रिवाड़ी - जयपुर रियासत के 1st गैर सरकारी मंत्री

↳ 1943 - 'लोडवाणी' समाचार पत्र
[जमनालाल बजान की याद में]

→ यह पुजामण्डल के अध्यक्ष बनाए गए थे

→ ^{आजादी के बाद} कालान्तर में इन्हें RPSC का अध्यक्ष बनाया गया था [सर्वाधिक लम्बा कार्यकाल]

- चिरंजीलाल अग्रवाल

↳ संगठन- प्रगतिशील पुजामण्डल

↳ जयपुर पुजामण्डल द्वारा

मोतीलाल प्रिक्स - 5 April 1931
(मोतीलाल तेजावत)

छंदी

↳ संस्थापक - नित्यानन्द
कान्ति लाल

* प्रदीपदल मेहता

↳ अन्य संगठन - छंदी देशी राज्य लोखरीपद

* समाचार पत्र - राजस्थान

राजस्थान
साप्ताहिक

राजस्थान Weekly

↓
साप्ताहिक समाचार पत्र

• 1923 ई. में ब्यावार से
प्रकाशित होता था

• इसमें हाईली भैरवी
खबरें प्रकाशित होती थी

मारवाड

↳ मरूधर हितकारिणी सभा

↳ स्थापना - 1918

→ संस्थापक - चांदमाल सुराणा

→ पुनर्गठन - 1923 - जयनारायण व्यास

तथा इजडा खदलकर 'मारवाड हितकारिणी सभा'

कर दिया गया था।

→ डालान्तर में इसे 'मारवाड युवलीग' में मिला लिया
गया था

→ मारवाड सेवा संघ

↳ स्थापना - 1920

→ संस्थापक - जयनारायण व्यास

→ अध्यक्ष - दूर्गाशंकर

→ सचिव - उयागराज भण्डारी

→ आंदोलन - तौल आंदोलन (नेतृत्व)

↓
100 तोले के स्थान पर 80 तोले का
एक सेर बुर दिया गया था

→ मारवाड देशी राज्य जोड़ परिषद् → 1929

↳ संस्थापक - जयनारायण व्यास

→ यह संगठन जोधपुर में अपना प्रथम अधिवेशन आयोजित करना चाहता था लेकिन जोधपुर रियासत ने नेताओं को गिरफ्तार कर लिया।

↳ जयनारायण व्यास

आनन्दराज सुराणा

भुवनेश्वर सराफ

नगौर की विशेष अदालत में इनके खिलाफ मुकदमा चलाया गया था।

→ 1st अधिवेशन - 24-25 Nov 1931

- पुण्डुर
- अध्यक्ष - चौधुरण शारदा
- कई छोटे नेताओं ने भी इस अधिवेशन में भाग लिया था

↓
जैसे → अणिलाल बोठारी

काका कुलेस्कर

पुस्तुरषा गांधी

अधिवेशन इगार-पुहार के लिए

→ मारवाड़ यूथ लीग - 10 May 1931

→ संस्थापक - अयनारायण व्यास

→ इस संगठन का नाम बदलकर 'बाल भारत सभा' कर दिया गया था

→ 1932 ई. में सुगनराज चौपासीवाला ने जोधपुर में भारतीय झंडा फहराया था।

→ मारवाड़ पुजामण्डल - 1934

↳ अध्यक्ष - भोंवरलाल सराफ

→ 1936 * कृष्णा दिवस (बॉम्बे)
शिक्षा दिवस (जोधपुर)

→ 1936 ई. में जयनारायण व्. टुखिल भारतीय देशी राज्य लोकपरिषद् का अधिवेशन बुराची में आयोजित किया गया था तथा जयनारायण व्यास को इसमें महामंत्री बनाया गया था।

→ जोधपुर रियासत के व्यासजी पुर्वेश्वर पाखंडी लगाती

→ सीकानेर महाराजा गंगासिंह ने जोधपुर के प्रधानमंत्री डीनाल फील्ड को पत्र लिखा तथा इस पाखंडी को हटवाया।

→ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान व्यासजी को सिवाणा जिले में नजरबंद किया गया था तथा पुजामण्डल के अन्य नेताओं जालोर जिले में नजरबंद किया गया था।

→ मारवाड़ लोक परिषद् - स्था. - 1938

↳ अध्यक्ष - रणछोड़ दास गहूनी

→ 1942 ई. में इसका 11^{वाँ} अधिवेशन लाडनू में आयोजित किया गया था जिसकी अध्यक्षता रणछोड़दास गहूनी ने की थी।

→ इस संगठन ने किसान आंदोलनों का नेतृत्व किया था

चंडावल (पाली) घटना - 28 March 1942

↳ चंडावल के सामन्त ने किसानों की सभा पर लाठी चार्ज कर दिया था

डावड़ा फाँड़ - 13 March 1947

(डीड़वाना - कुचामन)

↳ डीड़वाना के सामन्त ने किसानों की सभा पर लाठी चार्ज करवा दिया था तथा इसमें कई किसान शहीद हो गए थे।

↳ जैसे - मोतीलाल जी
यून्नीलाल जी

→ इस घटना में मधुरादास मधुर घायल हो गए थे।

→ 1941 ई. में जयनारायण व्यास को जोधपुर नगरपालिका का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था।

→ 1945 ई. में द्वारिकादास पुरोहित को जोधपुर नगरपालिका का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया था।

→ 1945 ई. में नेहरू जी के बुलने पर डोनाल्ड फ़िल्ड के स्थान पर C.S. वेङ्कटाचारी को जोधपुर का प्रधानमंत्री काया गया था।

→ माखाड़ सत्याग्रह दिवस - 26 July 1942

(> माहिमा देवी किंकर के नेतृत्व में महिलाओं ने इस सत्याग्रह में भाग लिया था।

14/08/2025

(नेहरू जी के बुलने)
1938 ई. में सुभाषचन्द्र बोस तथा विजयलक्ष्मी पंडित ने जोधपुर की यात्रा की थी

जयनारायण व्यास

पुस्तकें

समाचार पत्र

1. मारवाड़ की अवस्था
2. पोवाबाई की पोल
3. मार्च से संघर्ष क्यों?
4. शमजी ने झोलमो
5. म्हाने ऐसो दीजे देस
6. मत दूध लजाइजे

1. अखण्ड भारत
↳ हिन्दी में व बाँम्बे से

2. Peep
↳ इंग्रेजी में व दिल्ली से

3. तरुण राजस्थान
↳ हिन्दी | ब्यावर

4. आंगीवाण
↳ शजस्थानी | ब्यावर

→ यह 'शजस्थानी में
पहला राजनीति सामाचार'

पत्र था [1932]

हाडौली

↳ संस्थापक - ^(श.से. अंदा संस्था) नथनूराम शर्मा
हाजी फैज मोहम्मद

→ पुजामण्डल ने खेगार विरोधी आंदोलन चलाया था

बीकानेर

↳ सर्वहितधारिणी सभा

↳ स्थापना - 1907, चुरू

→ संस्थापक - कन्हैयालाल हुँद
स्वामी गोपालदास

→ इस संगठन ने शिक्षण संस्थानों की स्थापना की थी

↳ जैसे - 1. डबीर पाठशाला - बलि तो हेतु
2. फुली पाठशाला - लड़कियाँ हेतु

→ इस संगठन को 'चुरू की वाँगेस' कहा जाता था।
(जननी)

1930, 31, 32]

स्वामी जी
मुबारक हो
दुलार साहू
गोलमेज
(समिति)

→ 26 Jan 1930 ई. - धर्मस्तूप (चुरु)

[स्वामी गोपालदास
चन्दनमल बहड़] भारतीय सण्डाफुदराया

→ दूसरे गोलमेज सम्मेलन (1931) के दौरान
महाराजा गंगासिंह के खिलाफ
'लीडनेर दिग्दर्शन' नामक पत्रें बाँटे गए थे

लीडनेर पत्रिका मुकुदमा - 1932

↳ 'लीडनेर दिग्दर्शन' के कारण कई राजनीतिक
कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया गया था

↳ जैसे - स्वामी गोपालदास
चन्दनमल बहड़
सत्यनारायण सराफ
शुभराम सराफ

→ पुजामण्डल की स्थापना कुलकुला की गई थी।

↳ संस्थापक - वैद्य मधाराम

* लक्ष्मी देवी आचार्य (w)

मुक्ता प्रसाद, मिश्रा लाल ठीहरा

लक्ष्मी देवी आचार्य, लक्ष्मण दास स्वामी

→ बीकानेर देशी राज्य लोड परिषद्

↳ स्थापना - 1942

→ संस्थापक - रघुवर दयाल घोषल

→ 1 July 1946 ई. को रायसिंहनगर (भंगानगर) में पुलिस द्वारा जुलूस पर फायरिंग कर दी गई थी तथा इसमें वीरबल नामक एक युवक शहीद हो गया था

* 17 July को वीरबल दिवस मनाया गया था

- इन्दिरागांधी नहर की जैसलमेर शाखा को वीरबल शाखा कहा जाता है।

* तीबानेर के किसान आंदोलन

1937 - उदरासर → जीवठाराम
(Bknh)

1938 - महाजन -
(Bknh) ^{Bknh के संगी ठिकाना}

1944 - दूधवा खारा → * हनुमान सिंह आर्य
(चुरु) ^{Bknh के सबसे बड़े किसान नेता}

1946 - ठाँगा → मेघ सिंह आर्य
(चुरु)

1930-31 - गंगनहर - [→ परवार सिंह] → जमींदार संघ
[→ कस्तूर सिंह]

आख्यान - सिंघाई कुर
प्राणी

धौलपुर

↳ आर्य समाज के स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने धौलपुर में राजनीति के चेतना का संचार किया था

→ आचार सुधारिणी सभा

↳ स्थापना - 1910

→ संस्थापक - ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु
यमुना प्रसाद

→ नागरी पुनर्चारिणी सभा

(हिन्दी, देवनागरी)

↳ स्थापना - 1934

→ संस्थापक - ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु
शकुलाल

→ पुजामण्डल - 1936

↳ संस्थापक - ज्वाला प्रसाद जिज्ञासु
कृष्णदत्त पालीवाल

धौलपुर में 35वां
तस्मिन् ठांड - 11 अप्रैल 1947

↳ पुलिस कार्रवाई में (2) युवक शहीद हो गए थे
↳ पंचम सिंह
हल्दर सिंह

मेवाड़

↳ पुजामण्डल की स्थापना हरिपुरा डाकघरेशन के बाद की गई थी (March 1938)

→ स्थापना - 24 अप्रैल 1938

→ संस्थापक - बलवन्त सिंह मेहता - अध्यक्ष
भूरेलाल बया - उपाध्यक्ष
माणिक्य लाल वर्मा - महामंत्री

→ ~~के~~ पुजामण्डल की स्थापना बलवन्त सिंह मेहता के घर की गई थी [साहित्य कुटीर]

→ मेवाड़ रियासत ने पुजामण्डल पर रोह लगा दी
अतः वर्मा जी ने हजमेर से पुजामण्डल का संचालन किया

↓
• वर्मा जी ने यहां पर 'मेवाड़ का वर्तमान शासन' नामक पुस्तक लिखी।

इस पुस्तक में मेवाड़ के शासन की मालोचना की गई थी

→ मेवाड़ पुजामण्डल ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया

↓
रमेश चन्द्र व्यास - 1st सत्याग्रही

भूरेलाल बया को सराड़ा (वापस) जिले में नजरबंद कर दिया गया था

↳ मेवाड़ का बुला-पानी

डाकघर में नजरबंद

माणिक्य वर्मा को भी गिरफ्तार किया गया था
↓
आपने 'हरिजन' समाचार पत्र में गांधी जी ने इसकी
झालोचना की थी।

→ प्रथम अधिवेशन - 1941, उदयपुर

↳ अध्यक्ष - माणिक्य लाल वर्मा

→ आचार्य ^{Jivanddas Bhargwadass} J.B. हपालानी ने इस अधिवेशन का
उद्घाटन किया था

→ विजयलक्ष्मी पण्डित ने खादी प्रदर्शनी
की उद्घाटन किया था।

16/08/2025

→ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान पुजामण्डल के नेताओं
को गिरफ्तार किया गया था।

↳ जैसे - बलबन्त सिंह मेहता
मोहनलाल सुखाड़िया
माणिक्यलाल वर्मा

इस आंदोलन के दौरान कई महिलाएं भी जेल गई थी।

↳ जैसे - नारायणी देवी वर्मा माणिक्य - पाली
सुशीला इन्दी

* भगवती देवी विशनोई

शिवचरण मायुर ने गुना - डोरा रेल्वे लाइन को नष्ट कर दिया था।

→ 1946 ई. में अखिल भारतीय देशी राज्य लोड परिषद् का 7 वाँ अधिवेशन उदयपुर के सलेटिया मैदान में आयोजित किया गया था।

↳ अध्यक्ष - जवाहरलाल नेहरू

CM → ^(शेर-ए-कश्मीर) शेख अब्दुल्ला (कश्मीर) ने भी इस अधिवेशन में भाग लिया था

→ मेवाड़ पुजामण्डल के अन्य केन्द्र

मेवाड़ में

1. भीलवाड़ा - रमेशचन्द्र व्यास
2. नाथदारा - नरेन्द्रपाल

मेवाड़ के बाहर

बॉम्बे
नागपुर
जलगाँव
आहोला

Mh.

शाहपुरा → राजा - सुदर्शन देव

साहित्य लेखन में जा रहे थे

→ माणिक्यलाल वर्मा की प्रेरणा से पुजामण्डल की स्थापना की गई थी।

→ संस्थापक - लालूराम व्यास

रमेशचन्द्र ओझा

लक्ष्मीनारायण कुटिया

* → महाराजा सुदर्शन देव ने पूर्ण उत्तरदायी शासन की स्थापना की थी [Ray. में]st.

→ प्रधानमंत्री - गोकुल लाल इसावा

अलवर

→ संस्थापक - हरिनारायण शर्मा (बहुत अच्छे नेता)

→ पुजामण्डल ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग नहीं लिया था

→ st अधिवेशन - 1944

→ अध्यक्ष - भवानीशंकर शर्मा

→ 1941 ई. में राजगढ़ में 'जगीर माफ़ी' सम्मेलन आयोजित किया गया था।

→ 1946 ई. में खेड़ा मंगलसिंह नामक गाँव में एक अधिवेशन का आयोजन किया गया था जिसमें डिलानों के भूमि-स्वामित्व की मांग की गई थी।

हरि नारायण शर्मा के संगठन-

समाज

सुधार के संगठन • वाल्मीकि संघ

• आदिवासी संघ

• अस्पृश्यता निवारण संघ

भरतपुर - राजा - किशनसिंह

↳ हिन्दी साहित्य समिति

↳ स्थापना - 1912

→ संस्थापक - जगन्नाथ पास अद्विबारी

→ 1927 ई. में भरतपुर में हिन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया था

↳ अध्यक्ष - गौरीशंकर हिराचंद ओझा

↳ भरतपुर महाराजा विश्वनाथसिंह ने
हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित कर
दिया था।

→ મોરતપુર રિયાસત ને પુજામઠલ
કા પંજીકરણ નહીં દિયા થા।

इसतः पुजामण्डल ने सत्याग्रह प्रारम्भ किया
एक दौरान कई महिलाओं को जेल भेजा
गया था

↓
↳ जैसे - *सुशीला त्रिपाठी
शजेश्वरी देवी
धर्मवती

→ कालान्तर में पुजामण्डल का पंजीकरण
'भारतपुर पुजा परिषद्' के नाम से किया गया था

कुरौली

↳ पूर्णसिंह + मदनसिंह - राजनीतिक चेतना का
संचार किया था

→ 1927 ई में मदनसिंह ने अपनी पत्नी सरदार कुंवर
के साथ मिलकर किसान आंदोलन का नेतृत्व किया था

पुजामण्डल → संस्थापक - *तिलोत्त चन्द माथुर

चिरंजी लाल शर्मा

डोरा

↳ संस्थापक - नयनुराम शर्मा

अभिन्न हरि

तनसुख लाल मिश्र

→ Ist अधिवेशन → 1939 - मांगरोल (बारा)

↳ अध्यक्ष - नयनुराम शर्मा

→ IInd अधिवेशन → 1940 - डोरा

↳ अध्यक्ष - अभिन्न हरि

→ इस अधिवेशन में विजयसिंह पथिक ने भाग लिया था

→ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान मोतीलाल जैन के नेतृत्व में पुजामण्डल के कार्यकर्ताओं ने डोरा के नगर प्रशासन पर अधिकार कर लिया था।

कॉलेज के छात्रों ने रामपुरा पुलिस थाने पर अधिकार कर लिया था।

विशनगढ़

↳ संस्थापक - क्रान्तिचन्द चौधानी
जमान शाह

सिरौही

↳ संस्थापक - गोकुल भाई भट्ट - Rvj. का गांधी
वृद्धि शंकर
धर्मचन्द सुराणा

→ स्थापना - लॉम्बे

कुशलगढ़

↳ संस्थापक - भंवरलाल निगम

लॉसवाड़ा

↳ संस्थापक - भणिशंकर नागर

धूलजी भाई भावसार

भूपेन्द्र नाथ त्रिवेदी

↳ समाचारपत्र - संग्राम [लॉम्बे]

- ② श्री पत्नी
- विजयावलि भावसार ने महिलामण्डल का गठन किया था।
 - आदिवासी नेताओं ने भी पुजामण्डल कांदोलन में भाग लिया था।

↳ जैसे - कुबला भूगत

देवा

दीपा

पुजा - थाना
महाराष्ट्र

डूंगरपुर

↳ स्थापना - 1 Aug 1944 [तिलक की पुण्यतिथि पर]

→ संस्थापक - भोगीलाल पाण्ड्या - [वागड का गांधी]

हरिदेव जोशी

गौरीशंकर उपाध्याय

↳ समाचार पत्र - शेवक

→ पुजामण्डल ने पुथाणस्पन्नाओं का आयोजन किया था।

● रस्तापाल घटना - 19 June 1947

रास्तापाल घटना - 19 June 1947

↳ इस घटना में अध्यापक ^{सेंगाभाई} नानाभाई तथा भील बालिका कालीबाई शहीद हो गए थे।

↳ इन दोनों की मूर्तियां गोपसागर (डूंगरपुर) के पास स्थित हैं।

बालिका शिक्षा के क्षेत्र में कालीबाई पुरस्कार दिया जाता है।

एक अन्य अध्यापक सेंगाभाई घायल हो गए थे।

पूनावाड़ा घटना - May 1947

↳ अध्यापक शिवराम भील घायल हो गए थे।

→ कुलान्तर में गौरीशंकर उपाध्याय को डूंगरपुर का प्रधानमंत्री बनाया गया था।

18/08/2025

जैसलमेर

↳ संस्थापक - मीठालाल व्यास

→ पुजामण्डल की स्थापना जोधपुर में ही गई थी

→ रघूनाथ सिंह का संगठन - माहेश्वरी नवयुवक मंडल

प्रतापगढ़

↳ संस्थापक - डामृतलाल पाथक

युन्नीलाल उप्पाडर

* ठक्कर बापा सेनेता

↳

1922-ठक्कर बापा ने

'भूलि लेवा मण्डल' की स्थापना की थी।

इन्होंने ऋषभदेव से भूलि आश्रम की स्थापित किया था

मीठा आंदोलन के दौरान

इन्होंने जयपुर के पुछानमंरी

मिर्जा स्मथल को पत्र लिखा था।

झालावाड

↳ संस्थापक - मांगीलाल ब्रह्म

महबूल झालम

कन्हैयालाल मिश्र

1955 (झालावाड राजा)

→ राजाणा हरिश्चंद्र के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन
स्थापित किया गया था

Springboard
ACADEMY



✽- राजस्थान के राजनीति एवं सामाजिक संगठन ✽

आर्य समाज - 1875, बॉम्बे - स्वामी दयानन्द सरस्वती

↳ 1875 ई. - स्वामी दयानन्द सरस्वती
↳ बॉम्बे

→ 1865 ई. में राजा मदनपाल के बुलाने पर स्वामी दयानन्द सरस्वती बुरोली आए थे।

→ 1881 ई. में स्वामी जी ने भरतपुर की यात्रा की थी

इस समय ब्रजमेर में आर्य समाज तथा जयपुर में वैदिक धर्म सभा [बाद में आर्य समाज] स्थापित किए गए थे।

मेवाड़ राजा - सज्जनसिंह
→ कुविराजा श्यामलदास जी के बुलाने पर स्वामी जी चिलौड़ पहुंचे

मेवाड़ महाराणा सज्जनसिंह ने स्वामी जी को नौलखा महल [गुलाब बाग, उदयपुर] में ठहराया था।
यही पर स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण लिखा था।

→ फरवरी 1883 ई. में उदयपुर में परोपकारिणी सभा की स्थापना की गई थी तथा महाराणा सज्जनसिंह ने इसका समर्थन किया गया था।

कालान्तर में इस सभा को अजमेर स्थानान्तरित किया गया था।

RAS 2021

→ अजमेर में *वैदिक यंत्रालय स्थापित किया गया था

यहाँ से सत्यार्थ प्रकाश का प्रकाशन किया गया था

→ प्रधानमंत्री सर प्रताप के बुलाने पर स्वामीजी जोधपुर गए थे।

जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह II तथा इसके मंत्री शव राजा तेजसिंह स्वामीजी से प्रभावित थे।

जसवंतसिंह II की प्रेमिका नहीं जान ने स्वामीजी को जख्म जहर दे दिया था

→ 30 Oct 1883 ई को फिरोजपुरी के दिन अजमेर में स्वामीजी मृत्यु हो गई थी

→ आर्यसिमान के कार्यकर्ता

विष्णु पंड्या - मेवाड़

वासुदेव खंडेलवाल - अलवर

जुगल विशोर चतुर्वेदी

मास्टर आदित्येन्द्र

भरतपुर

कल्याण सिंह

श्यामलाल वर्मा

जयपुर

चाँदपुरी शर्मा

हरविणाय शर्मा

भाड़

अजमेर

સુઝદા દેવી - મજમેર
પત્ની

ચાંદકુરણ શારદા કી પુસ્તકે - વિધવા વિવાહ
દલિતોદ્ધાર

(આર્યભાગ)
→ સમાચાર પત્ર જગદિત કારકુ
જગલાભ ચિન્તકુ
પરોપકારકુ

→ 1885 ई. में सर पुताप ने जोधपुर में 'बाल-विवाह
प्रतिरोधक अधिनियम' पारित किया था [1929 - अंग्रेज]

(मौलिक)
हर्षिलास शारदा ने प्रयासों से 1929 ई. में अंग्रेजों
ने भारत में बाल-विवाह प्रतिरोधक अधिनियम पारित
किया था, जिसे 'शारदा अधिनियम' भी बुझा जाता है।

हर्षिलास शारदा एक अच्छे इतिहासकार भी थे।

देश हितैषिणी सभा

- ↳ स्थापना - 2 July 1877 (1st July)
- संस्थापक - महाराणा सज्जनसिंह मेवाड़
- छविशजा श्यामलदास जी भी इस संगठन के सदस्य थे
- यह राजस्थान की किसी भी रियासत में पहला समाज सुधार संगठन था।

राजपूत हितधारिणी सभा

- ↳ स्थापना - 1889
- संस्थापक - वॉल्टर (A.G.G.)
- वॉल्टर राजस्थान के राजपूतों में समाज सुधार फैलाना चाहता था। अतः उसने सज्जन में
- ② सम्मेलन आयोजित किए थे।

↳ 1888, 1889

↓
→ सम्मेलन के निर्णय

- ↳ 1. विवाह की न्यूनतम आयु तय की जानी चाहिए [14 वर्ष, 18 वर्ष]
- 2. बहुविवाह को रद्द किया जाना चाहिए
- 3. विवाह में होने वाले खर्च को सीमित किया जाना चाहिए।

4. त्याग पथा को समाप्त किया जाना चाहिए।

↳ राजा द्वारा पूजा की शर्तों में किया।

पूजा इत्यादी को हटा दिया जाता था।

→ कानूनी आवश्यकता के अभाव में समाज सुधार के प्रयास सफल नहीं हो पाए थे। अतः 1936 ई में यह संगठन बंद कर दिया गया था।

वीर भारत सभा

↳ स्थापना - 1910

→ संस्थापक - देसरी सिंह वारहठ

→ यह सभा संगठन आभिनव भारत की राजस्थान शाखा

↳ वीर सावरकर

पुलाप सभा

↳ स्थापना - 1915

→ संस्थापक - बलवंत सिंह मेहता

→ इस संगठन के पुलाप जयंती मनाना तथा हलीधारी मेला लगाना प्रारम्भ किया था।

राजपूताना मह्य भारत सभा

↳ स्थापना - 1918

↳ स्थान - मारवाड़ी पुस्तकालय, चाँदनी चौक - दिल्ली

→ संस्थापक - जमनालाल बजाज [अध्यक्ष]
गणेश शंकर विद्यार्थी [अध्यक्ष]
विजयसिंह पथिक
चाँदूरण शारदा
नरसिंह देव सरस्वती

→ मुख्यालय - अजमेर

→ कार्यालय - कानपुर

→ अधिवेशन

1918 - दिल्ली - ^{कपीतन में ना हो तो} गिरधर शर्मा (जमनालाल बजाज)

1919 - अमृतसर - जवाहर लाल नेहरू

* March 1920 - *अजमेर - *जमनालाल बजाज

Dec. 1920 - नागपुर - गणेशनारायण सोमानी

↳ • इस अधिवेशन में N.C. वेल्कर को

• अध्यक्ष चुना गया था लेकिन वह अधिवेशन में भाग नहीं ले पाए थे।
इसी अधिवेशन में विजयसिंह पथिक ने किसानों की एक पुदर्शनी का आयोजन किया था।

- इसी अधिवेशन में इस संगठन को कांग्रेस का संयोगी सहयोगी संगठन घोषित कर दिया गया था

राजस्थान सेवा संघ

↳ स्थापना - 1919 - वर्धा (महाराष्ट्र)

→ संस्थापक - विजयसिंह पथिक

शमनारायण चौधरी

हरिभाई किंकर

अर्जुनलाल सेठी

देसरीसिंह वारह

→ 1920 ई. में अजमेर में इसका मुख्यालय बनाया गया था।

→ इस संगठन ने राजस्थान में विज्ञान भास्कोलनों का नेतृत्व किया था।

→ 1928 ई. में नेताओं के आपसी मतभेदों के कारण यह संगठन बंद हो गया था।

1932

राजपूताना हरिजन संघ (Rajwaringh).

↳ स्थापना - 1934

→ अध्यक्ष - हरविलास शारदा

1932 ई. में गांधीजी ने 'एकजिल भारतीय हरिजन संघ' का गठन किया था तथा दानश्यामदास षिंदला को इसका अध्यक्ष बनाया गया था।

दुर्गपुर

खौलई आश्रम

↳ स्थापना - 1934

→ संस्थापक - माणिक्यलाल वर्मा

→ आदिवासी क्षेत्रों में इस संगठन ने शिक्षा के लिए कार्य किया था।

* महिला मण्डल

↳ स्थापना - 1935, उदयपुर

* → संस्थापक - * दयाशंकर श्रोत्रिय

वागड़ सेवा मंदिर

↳ स्थापना - 1935

→ संस्थापक - भोगीलाल पाण्ड्या
गौरीशंकर उपाध्याय

वागड़ सेवा संघ

↳ स्थापना - 1938

→ संस्थापक - भोगीलाल पाण्ड्या

→ इस संगठन ने भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लिया था

वनवासी सेवा संघ

↳ स्थापना - 1940

→ संस्थापक - भोगीलाल पाण्ड्या
भूरूलाल व्यास
मानसिंह

→ आदिवासी क्षेत्रों में इस संगठन ने विद्यालय, पुस्तकालय
तथा छात्रावास स्थापित किए थे

महिला शिक्षा सदन

↳ स्थापना - 1945, दहली - अजमेर

→ संस्थापक - हरिभाऊ उपाध्याय

मित्रमण्डल - साधु सीताराम दास

विद्यार्थी युव लीग - टीकाराम पालीवाल

सर्व सेवा संघ - सिद्धराज ठठ्ठा

माखाड़ किसान संघ - बलदेव राम मिर्धा

↳ 1st अध्यक्ष - मंगलसिंह कुच्छावा

0118

Springboard
ACADEMY

✽ राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी ✽

जयपुर - अर्जुनलाल सेठी
बोया - देसी सिंह बारहठ
झजमेर - अरवा

अर्जुनलाल सेठी

→ जयपुर के रहने वाले थे

→ इन्होंने महाराजा कॉलेज से B.A. किया था।

→ चौमूं के सामन्त देवीसिंह के सचिव थे।

→ जयपुर महाराजा माधोसिंह - II इन्हें प्रधानमंत्री बनाना चाहते थे लेकिन इन्होंने बुरा था कि -

"यदि अर्जुनलाल नौबरी बरेगा, तो अंग्रेजों को देश से बाहर दौन निकलेगा"।

→ मथुरा के जैन-विद्यालय में शिक्षक का कार्य किया था।

→ 1907 ई. में जयपुर में वर्तमान विद्यालय की स्थापना की थी यह कान्तिदासियों की पाठशाला थी।

→ दिल्ली समझौते से जुड़े हुए थे [1912]

→ नीमोज (मारा) विहार] हत्याकाण्ड में गिरफ्तार किए गए थे। [1913]

अंग्रेजों ने इन्हें वेलूर (T.N.) जेल भेज दिया था।

इन्होंने जेल में भूख हड़ताल की थी।

जेल से छूटने के बाद तिलक ने उनका स्वागत किया था।

- गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लिया था।
- राजपूताना तथा मध्य भारत में इन्हें कांग्रेस का अध्यक्ष बनाया गया था।
- कालान्तर में इन्होंने राजनीति से संन्यास ले लिया था।
- अजमेर की दरगाह में अरबी, फारसी पहने लग गए थे।
- अपनी अजमेर यात्रा के दौरान गांधीजी ने इनसे मुलाकात की थी।
- मृत्यु के बाद इन्हें दफनाया गया था।

→ पुस्तकें - शुद्ध मुक्ति
स्त्री मुक्ति

1925
काठौरी ट्रेन एक्शन के
अशफाक उल्ला आँ की
शरण दी थी

→ नाटक - महेन्द्र कुमार
मदन पराजय
पार्श्व यज्ञ

रामप्रसाद बिस्मिल
रोशन सिंह
राजेन्द्र लाहिरी

→ नीमोज हत्याकाण्ड के अन्य आरोपी

↳ मोतीचन्द - फांसी

विष्णुदत्त - कुला-पानी (ASN)

जयचन्द

जोरावरसिंह

फरार

माणिक्यचन्द

शिवनारायण

अरबारी गवाह

सब बता दिया

सर मोरमत
नब बता दो

केसरीसिंह ठारहठ

विवेकानंद

↳ जन्म स्थान - देवखेड़ा, शाहपुरा (भीलवाड़ा)

→ इन्होंने मेवाड़ तथा डोगा रियासतों में कार्य किया था

→ 1903 ई. में गवर्नर जनरल लॉर्ड कर्जन ने
फिल्ली दरबार का आयोजन किया था। <sup>मलवर - जयसिंह
राजा</sup>

मेवाड़ महाराजा फतेहसिंह इसमें भाग लेने के लिए
जा रहे थे।

इस समय केसरीसिंह ने इन्हें 13 ^(फोटो) सारों लिखकर
भेजे थे जिन्हें 'चेतावनी' श. चूंगट्या बुझा जाता है।

इन्हें पढ़ने के बाद फतेहसिंह ने फिल्ली दरबार में
भाग नहीं लिया था।

→ केसरीसिंह के बुझने पर श्यामजी कृष्ण वर्मा ने मेवाड़
में कार्य किया था

ॐ

श्यामजी कृष्ण वर्मा अजमेर नगरपालिडा के पहले
Chairman थे

20/08/2025

→ डोगा में इन्हें Superintendent of ^(मानवशास्त्र) Ethnography बनाया गया था

→ कोरा हे महन्त ^(Jaffr) प्यारेलाल हत्याकाण्ड (1912) में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा हजारीबाग जेल भेज दिया गया था।

→ कालान्तर में गाँधीजी हे पास ^(Mh) बंधा चले गए थे।

→ इनका अन्तिम समय बौरा में बीता था।

→ पुस्तकें

श्यामलदास जी की जीवनी

बुद्धचरित (अश्वघोष) का हिन्दी अनुवाद

^(पहले संस्करण)
मैजिनी की जीवनी का हिन्दी अनुवाद
(इतनी दे अन्तिम हारी)

→ कैपरीसिंह बरहठ हे शिक्षा सम्बंधी विचार

English → हिन्दी

Mayo College → क्षत्रिय कॉलेज

England → जापान
(For higher edu.)

→ महन्त प्यारेलाल हत्याकाण्ड हे अन्य आरोपी-

↳ 1. सोमदत्त लहरी

↳ जोधपुर में हॉस्टल वॉर्डन थे

2. हीरालाल जालोरी

3. शमभरण

4. लक्ष्मी लाल भटनागर - सरकारी गवाह

जोरावरसिंह बाराह

↳ देसरीसिंह बाराह के छोटे भाई

→ दिल्ली बमब्लास्ट तथा निमोज हत्याकाण्ड से जुड़े हुए थे।
लेकिन इंग्रेज उन्हें गिरफ्तार नहीं कर पाए थे।

→ अपना अन्तिम समय इमरदास बैरागी के रूप में
बिताया था।

प्रतापसिंह बाराह

↳ देसरीसिंह बाराह के पुत्र

family → दिल्ली बमब्लास्ट से जुड़े हुए थे [फरार]

→ बनारस अश्वमेध मुकुट में गिरफ्तार किया गया था।

→ बरेली जेल में पुलिस प्रताड़ना में शहीद हो गए थे

(U.P.)
→ इंग्रेजी अधिकारी चार्ल्स ब्लीक्लेंड प्रतापसिंह की
(चार्ल्स ब्लीक्लेंड)

बहादुर की प्रशंसा की थी।

→ बीकानेर रियासत ने जामसिंह के प्रवेश पर पाबंदी लगा दी थी।

ईश्वरदान आसियां

↳ देसरीसिंह बाराह के दामाद

→ दिल्ली बमकाण्ड से जुड़े हुए थे

→ रास बिहारी बोस ने देसरीसिंह बाराह के परिवार की प्रशंसा की थी

राव गोपाल सिंह खरवा (संभव)

↳ खरवा के सामन्त थे

→ रासबिहारी बोस सम्पूर्ण भारत में सशस्त्र क्रान्ति करना चाहते थे तथा इसके लिए 21 फरवरी 1915 का दिन तय किया गया था।

राजस्थान में इसकी जिम्मेदारी राव गोपाल सिंह खरवा को दी गई थी।

इन्होंने अजमेर तथा जोधपुर के राजपूत सैनिकों को क्रान्ति में शामिल किया था।

अंग्रेजों को इस योजना का पता चल गया था अतः

इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था तथा होडा (संभव) जेल

में रखा।

→ जेल से फरार हो गए थे। लेकिन अंग्रेजों ने पुनः गिरफ्तार कर लिया तथा अजमेर की तिरहाट जेल में रखा।

→ कालान्तर में इन्हें शाहजहाँपुर जेल भेज दिया गया था

(U.P.)

जब तबशोर आपना इतिहास नहीं लिखता तब तब शिबुदारी बिजेता है।

विजयसिंह पथिक

↳ वास्तविक नाम - भूपसिंह

→ जन्मस्थान - गुठावली, बुलन्दशहर (U.P.)

→ शसविहारी बोस ने इन्हें क्रान्ति के लिए राजस्थान भेजा था।

↓

→ प्रारम्भ में गोपालसिंह खरवा हैं सहयोगी थे

→ अंग्रेजों ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया तथा रोडगढ़ जेल में रखा

→ जेल से फरार हो गए थे।

→ ओछड़ी में विद्या पुचारिणी सभा की स्थापना की थी।
(Chittorgarh)

→ राजस्थान में विमान हाइडोलनों के जनक थे।

→ बिजोलिया आंदोलन की जानकारी प्राप्त करने के लिए गांधीजी ने उन्हें दौड़े बुलाया था।

→ संगठन - वि वीर भारत समाज

→ पुस्तकें - 1. अजयमेरू

2. What are the Indian states?

बालमुकुन्द बिस्सा

↳ जन्म स्थान - पीलवा (डीडवाला-कुचामन)

→ जोधपुर तथा नागौर में खादी भण्डार स्थापित किए थे

→ जोधपुर पुजामण्डल के सत्याग्रह के दौरान उन्हें मिराफवार बुर लिया गया था।

→ जोधपुर जेल में भूख हड़ताल के दौरान शहीद हो गए थे।

[19 June 1942]

→ उन्हें 'राजस्थान का जतिनदास' कहा जाता है।

21/08/2025

सागरमल गोपा

- जैसलमेर के रहने वाले
- इन्होंने राजतंत्र तथा अंग्रेजी का विरोध किया था।
- जैसलमेर तथा हैदराबाद रियासतों ने इनके पुत्रों पर पाबंदी लगा दी थी।
- नागपुर में जैसलमेर पुजामण्डल की स्थापना की थी।
- 1941 ई. में इन्हें राजप्रोह के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया था तथा 6 वर्षों के लिए जेल भेज दिया गया था।
- 4 अप्रैल 1946 को इन्हें जैसलमेर जेल में जिया जला दिया गया था।
- उनकी हत्या की जांच के लिए गोपाल स्वरूप पाठु आयोग बनाया गया था।
- पुस्तकें -
 - आजादी के दीवाने
 - जैसलमेर का गुंडा राज
 - शधुनाथ सिंह का मुठफमा (गोपा के दोस्त)

राजस्थान सरकार ने * देश के दीवाने * नामक पुस्तक प्रकाशित की थी तथा इस पुस्तक में डा. स्वतंत्रता सेनानियों की जानकारी दी गई है।

रमेश स्वामी

लीडिंग राय - शक्ति
वायसरॉय ऑर्डर वेवेल
ब्रह्मपुर (अजमेर)
गान्धी

↳ 5 Feb 1947 ई. को भुसावर [भरतपुर] में बेगार विरोधी
डिमांदोलन में शहीद हो गए थे। [बस द्वारा कुचलकर]

13 अप्रैल में 1947 ई.

शान्तीलाल व आनन्दीलाल

↳ 5 अप्रैल 1948 ई. को उदयपुर में पुलिस फायरिंग में शहीद
हो गए थे।

पकड़ने के time
पर

रामदुराण / लूणदुराण / खूबराम

↳ 20 May 1948 ई. को मोरिया (ग्ग) में पुलिस फायरिंग
में शहीद हो गए थे।

ज्वालाप्रसाद शर्मा

↳ (हंस) कान्ति सिंह की पत्नी
थे M.S.R.N. के सदस्य थे

→ अजमेर में श्रान्तिदारी गतिविधियों में भाग लिया था

↳ जैसे- 1. मेयो कॉलेज, बंम बांड

2. डोगरा बांड शान्तिबाघ डोगरा (पुलिस लाया)

शान्तिबाघ

3. अजमेर रेल स्टेशन

→ डोगरा बांड के अन्य आरोपी - शमसिंह

फतेहचन्द

दामोदर दास राठी

↳ पोखरण के रहनेवाले थे।

→ इन्होंने व्यावर में कई संगठन स्थापित किए थे।

↳ जैसे-

कृष्णा मिल राज की सुतीकहा मील

नागरी पुचारिणी सभा व्यावर में

होमरूल लीग

सनातन धर्म विद्यालय

हिन्दी उदाव

→ कृष्णा मिल के आते वही हिन्दी में रखना प्रारम्भ कर दिया था

→ इनके बुझने पर, राजमोर के वृमीश्वर ने कार्यालयों में

हिन्दी भाषा के प्रयोग की अनुमति दी थी।

→ राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों को वित्तीय सहायता देते थे।

दामोदर दास राठी

नृसिंह अग्रवाल

धीरूलाल जाजोदिया

स्वतंत्रता संग्राम
के मामाशाह

मालपुरा (होंब)

दामोदरलाल व्यास को राजस्थान का लोह पुरुष
कहा जाता है। (भारत-सरदार वल्लभ भाई पटेल)

जमनालाल बजाज

↳ जन्म स्थान - वाराणसी कास (DK)

→ अन्य नाम - गांधीजी का 5वां पुत्र

गुलाम नं. 4 (भारत राज. लापुर)

→ तिलक के 'केसरी' समाचार पत्र को 100 रु की आर्थिक सहायता दी थी।

→ असहयोग आंदोलन के दौरान अपनी 'राय बहादुर' की उपाधि लौटा दी थी।

→ असहयोग आंदोलन के दौरान 'तिलक स्वराज फंड' में 1 लाख रुपये जमा करवाए थे।
1 Aug 1920
तिलक की मृत्यु के बाद

→ मुस्लिम लीग को भी 11 हजार रुपये दिए थे।

→ वर्धा में सत्याग्रह आश्रम की स्थापना की थी।
(1940)

हीरालाल शास्त्री

↳ 1929 ई. में निवाई (राँठे) में ^{पुत्री शान्ताबाई की पाद में} जीवन फुटीर की स्थापना की थी जिसे वर्तमान में वनस्थली विश्वविद्यालय के नाम से जाना जाता है।
यह महिला शिक्षा को समर्पित है।
यहाँ पंचमुखी शिक्षा दी जाती है।

→ आत्मकथा - प्रत्यक्ष जीवन शास्त्र

→ गीत - प्रलय प्रतीक्षा नमो नमो

23/08/2025

अंजना देवी चौधरी समन्वयक चौधरी सी पत्नी

↳ जन्म स्थान - श्रीमाधोपुर, SKR

→ मेवाड़ तथा बूंदी के ब्रिज आंदोलनों में भाग लिया था।

→ नमड सत्याग्रह के दौरान इन्हें गिरफ्तार किया गया था
यह राजस्थान की पहली महिला थी जिन्हें स्वतंत्रता
आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किया गया था।

शमा देवी जोशी

↳ जन्म स्थान - जयपुर

→ पति - लादूराम जोशी [विधवा पुनर्विवाह]

→ बिजोलिया आंदोलन के दौरान इन्हें गिरफ्तार किया
गया था अतः इन्होंने कहा था कि -

“जब तक किसानों पर अत्याचार समाप्त नहीं होंगे
मैं बार-बार यहाँ आती रहूँगी”

→ इन्हें सविनय अवज्ञा आंदोलन के दौरान भी गिरफ्तार
किया गया था।

शमा देवी देशपाण्डे ने जयपुर सत्याग्रह में भाग
लिया था।

जानकी देवी खजाज जमना जी की पत्नी

↳ जन्म स्थान - जावरा (M.P.)

→ इन्होंने अपना लम्बा समय वर्धा में बिताया था।

→ नमबु सत्याग्रह के दौरान इन्हें 6 महिनों के लिए जेल भेजा गया था।

→ 1933 ई. में फुलडुला में 'अखिल भारतीय माखड़ी सम्मेलन' की अध्यक्षता की थी।

→ जयपुर प्रजामण्डल का अध्यक्ष बनाया गया था।

→ विनोबा भावे के भूदान आंदोलन में भाग लिया था।
(जमना जी के गुरु)

भारत रत्न → 108 कुँआों का निर्माण कराया था।

पद्म विभूषण → इन्होंने गौ सेवा आयोग का अध्यक्ष बनाया गया था।
भूषण
श्री

→ 1956 में इन्हें पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया था।

[1st in Rajasthan]

रतन शास्त्री हीरा जी की पत्नी

↳ जन्म स्थान - खाचरोद (M.P.)

→ जयपुर प्रजामण्डल के सत्याग्रह में भाग लिया था।

→ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान भूमिगत कार्यकर्ताओं तथा उनके परिवारों की सेवा की थी।

→ 1955 ई. में इन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।
[Rथं. 7th महिला]

→ 1975 - पद्मभूषण से सम्मानित

जारायणी देवी वर्मा

↳ जन्म स्थान - सिंगोली, M.P.

→ 1944 ई. में भीलवाड़ा में महिला आश्रम की स्थापना की थी।

→ कालांतर में इन्हें राज्यसभा की सदस्य बनाया गया था
[1970-76]

शान्त त्रिवेदी

↳ 1947 में उदयपुर में राजस्थान महिला परिषद् की स्थापना की थी।

→ इन्होंने कहा था कि -

“ बिना आर्थिक सशक्तिकरण के महिलाओं के लिए राजनीतिक आजादी का कोई अर्थ नहीं है ”।

- # પદ્માશવતી સિન્હા - અંજમેર
- # દુર્ગાવતી શર્મા - ખચપુર
- # સરસ્વતી લોહ્ય - ખરતપુર
- # ગંગા દેવી - બાથસરા
- # હુમલા દ્વાધીન
- # હુસુમ ગુપ્તા } ઢોરા KKK
- # સવિત્રી દેવી ખાલી
- # સિરૈ હુંવર } જોધપુર
- # રાજ હૌર }

Springboard
ACADEMY

✧ राजस्थान का एकीकरण ✧

23 item

→ आजादी के समय राजस्थान में 19 रियासतें, 3 ठिकाने तथा 1 चीफ कमिश्नरी था।

③ ठिकाने - कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा)

नीमराणा अलवर (अलवर)

भावा (लौंड)

① चीफ कमिश्नरी - अजमेर-मेरवाड़ा

→ राजस्थान, सौराष्ट्र तथा मालवा की रियासतों को मिलाकर मेवाड़ महाराणा भूपालसिंह Rajasthan Union बनाना चाहते थे।

इसके लिए जयपुर में ② सम्मेलन आयोजित किए गए थे।

[June 1946
May 1947]

→ K.M. मुंशी महाराणा भूपालसिंह के सर्वेधानिबु सलाहकार थे।

→ जयपुर महाराजा स्वर्ण मानसिंह II (SMS) भी रियासतों को मिलाकर राजस्थान संघ बनाना चाहते थे। इस समय V.T. कृष्णामाचारी जयपुर के प्रधानमंत्री थे।

→ डोरा महाराव भीमसिंह 'हाड़ोंती संघ' बनाना चाहता था।

[डोरा, षूंदी, झालवाड़ा]

→ दुंगरपुर महारावल लक्ष्मणसिंह 'बागड़ संघ' बनाना चाहता था।
[दुंगरपुर, बांसवाड़ा, पुतापगढ़]

→ बीडानेर महाराजा आर्दल सिंह लुहार (MR) का विलय करना चाहता था।

→ 5 July 1947 ई. को रियासती सचिवालय का गठन किया गया था।

↳ अध्यक्ष - वल्लभभाई पटेल
सचिव - V.P. मेनन

→ 18 July 1947 - भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम पारित किया गया था।

इस अधिनियम की धारा-8 के तहत रियासतों के साथ छि गई अंग्रेजी संधियाँ समाप्त कर दी गई थी।

तलाब - तलाक - तलाब

→ रियासती सचिवालय के अनुसार वे रियासतें जिनकी जनसंख्या 10 लाख से अधिक तथा आय 1 ~~लख~~ से अधिक है, स्वतंत्र रह सकती हैं।

राजस्थान में ऐसी (1) रियासतें थी

↳ मेवाड़
जयपुर
जोधपुर
बीडानेर

→ 3 सिप्टेम्बर 19

→ 7 Aug 1947 ई. को बीकानेर महाराजा सादूल सिंह ने Instrument of Accession पर हस्ताक्षर कर दिए थे।
[प्रथम]

→ 14 Aug 1947 ई. को धौलपुर महाराजा उदयभानसिंह ने Instrument of Accession पर हस्ताक्षर किए थे।
[अन्तिम]

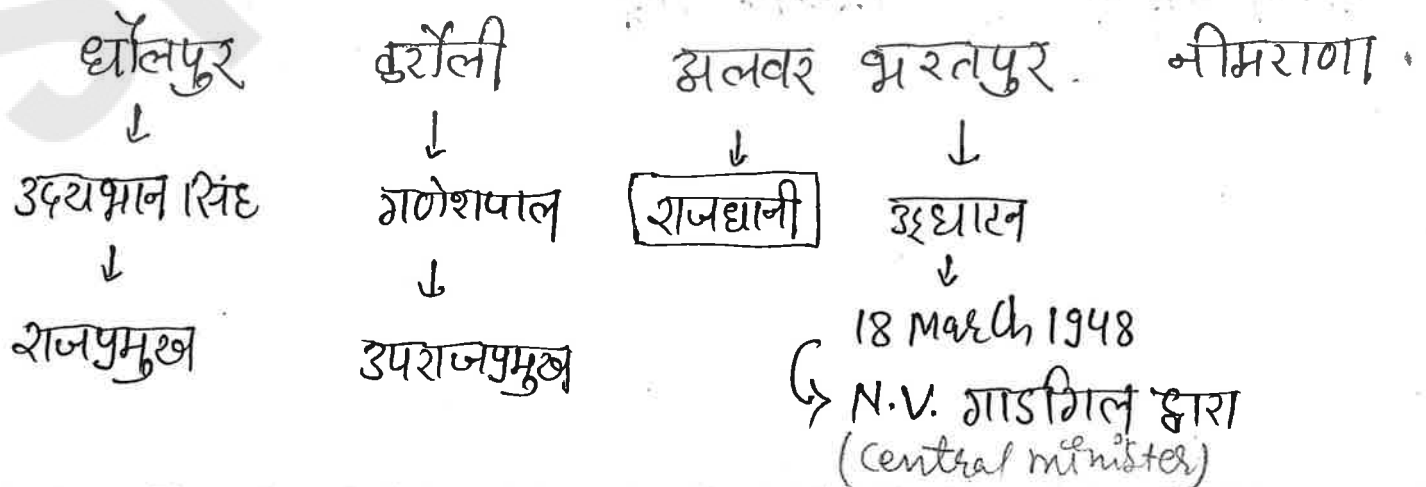
→ Instrument of Accession पर हस्ताक्षर करते समय बाँसवाड़ा महारावल चन्नीर सिंह ने कहा था कि -
"मैं अपने Death warrant पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।"

25/08/2025

→ भरतपुर तथा अजमेर ५ रियासतों का नियंत्रण भारत सरकार ने ले लिया था।

S.N. सप्रू को भरतपुर का प्रशासक बना दिया गया था।

प्रथम चरण → मत्स्य संघ - 4 रियासतें + 1 ठिकाना



↳ मत्स्य संघ

↳ क्षेत्रफल - 12,000 km²

जनसंख्या - 18 लाख

आय - 1.84 करोड़ रु.

→ K.M. मूंशी ने मत्स्य संघ का नामकरण किया था।

→ प्रधानमंत्री - शोभाराम कुमावत

→ उप प्रधानमंत्री - जुगल विशोर चतुर्वेदी

→ मंत्री - गोपीलाल यादव भारतपुर पुर्वांचल

चिरंजीलाल शर्मा बुर्खी

मास्टर भोलानाथ हालवर से

डॉक्टर मंगलसिंह हॉलपुर से

→ शाकुर देशराज तथा मानसिंह राजा का आई ने भारतपुर में उद्घाटन समारोह का विरोध किया था।

द्वि

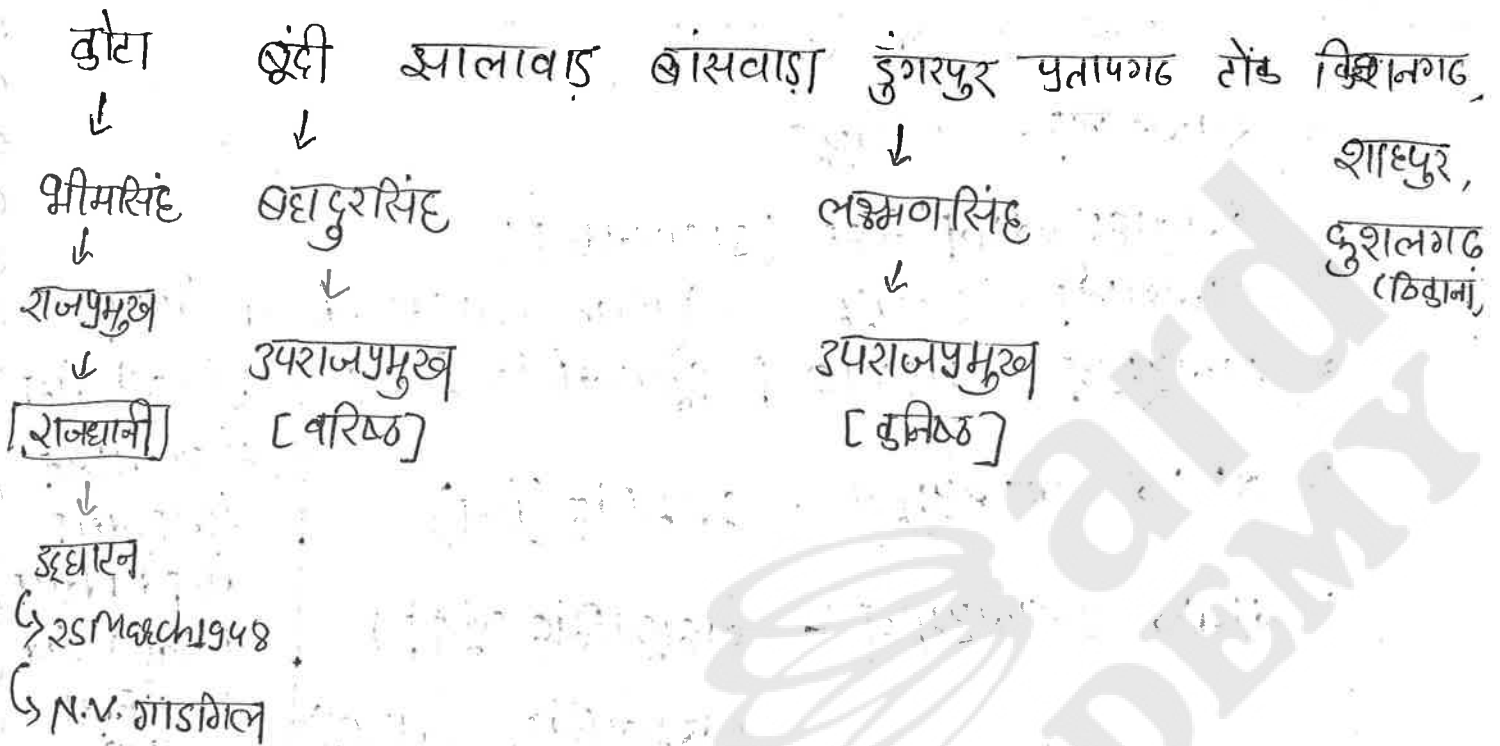
द्वितीय चरण

→ सजस्थान संघ

19
- 4
15
- 4 डी रिजर्व
11
- 1 जिस/मर
10
- 1 सिंह
9 राज्य
8 राज्य

द्वितीय चरण

→ राजस्थान संघ



→ क्षेत्रफल - $16,807 \text{ km}^2$

जनसंख्या - 23.5 लाख

आय - 1.90 करोड़ रु.

→ प्रधानमंत्री - गोकुल लाल अस्त्रावा शाहपुरा
मंत्री

→ विशानगढ़ मौर तथा शाहपुरा रियासतों ने हजमेर-मेरवाड़ा
में विलय का विरोध किया था।

बहादुरसिंह लपना
भीमसिंह
राजपमुख
शलेष

तृतीय चरण

→ संयुक्त राजस्थान → राजस्थान संघ + मेवाड़
(United States of Rajasthan)

↳ उद्घाटन - 18 April 1948

→ राजधानी - उदयपुर

जवाहर लाल नेहरू (उद्घाटनकर्ता)

→ राजधानी - उदयपुर → विधानसभा का एक अधिवेशन

→ राजप्रमुख - महाराणा भूपालसिंह मेवाड़

→ वरिष्ठ उपराजप्रमुख - भीमसिंह (बोरा)

→ द्विष्ठ उपराजप्रमुख - बहादुरसिंह (बूंदी)

लक्ष्मणसिंह (दूंगरपुर)

प्रतिवर्ष बोरा
में आयोजित
होगा तथा
बोरा हे बिहास
हे लिए विशेष
प्रयास किए
जाएंगे

→ प्रधानमंत्री - माणिक्यलाल वर्मा

→ उपप्रधानमंत्री - गोकुललाल मसावा

→ मंत्री - भोगीलाल पाण्ड्या

अभिन्न हरि बोरा

वृजसुन्दरशर्मा

भूरेलाल ख्यां मेवाड़

मोहनलाल सुखाड़ियां

प्रेमनारायण माधुर

→ क्षेत्रफल - 29,777 km^2

जनसंख्या - 42.60 लाख

क्षाय - 3.16 करोड़ रु.

(1 मिल = 1.6 km)

→ महाराणा भूपालसिंह ने 20 लाख रुपये जीवीपर्स की मांग की।

जीवीपर्स

↓

10 लाख रु.

राजप्रमुख का वेतन

↓

5 लाख रुपये

धार्मिक मनुष्य

↓

5 लाख रु.

→ राममनोहर लोहिया ने 'राजस्थान आंदोलन समिति' का गठन किया तथा शेष रियासतों के जल्दी विलय की मांग की।

चतुर्थ चरण

→

वृद्ध राजस्थान

संयुक्त राजस्थान +

जयपुर

जोधपुर

जैसलमेर

बीकानेर

10
+4
14

→ उद्घाटन - चैत्र शुक्ल एवम् विक्रमी संवत् 2006

[30 March 1949]

→ जयपुर - वल्लभभाई कर्माड पटेल द्वारा

→ महाराजप्रमुख - महाराणा भूपालसिंह मेवाड़

→ राजप्रमुख - सवाई मानसिंह II जयपुर

→ वरिष्ठ उपराजप्रमुख

- वरिष्ठ उपराजप्रमुख - महाराजा हनुवन्त सिंह जोधपुर
भीमासिंह डोटा
- कुनिष्ठ उपराजप्रमुख - बहादुरसिंह बूंदी
लक्ष्मणसिंह डूंगरपुर

→ प्रधानमंत्री - हीरालाल शास्त्री

- मंत्री - शव राजा हनूत सिंह (Patel/Prasad)
फूलचन्द बाफना
वृत्तसिंह कुटुम्बावा
भुरेलाल क्यां
मदनारायण माधुर
सिद्धराज बट्टा जयपुर
रघुवरपाल घोयल B.K.V.
वेदपाल त्यागी K.B.S.

→ जयपुर तथा जोधपुर में राजधानी को लेकर विवाद था।

अतः एक जांच समिति का गठन किया गया था।

→ सदस्य - B.R. पटेल (अध्यक्ष)
राजधानी विवाद T.C. पुरी
डेलीर S.P. सिन्हा

→ इस समिति की सिफारिश के आधार पर जयपुर को राजधानी बनाया गया था तथा जोधपुर को उच्च न्यायालय (High Court) दिया गया था।

→ 19 July 1948 ई. को लावा ठिठाना जयपुर रियासत में मिला लिया गया था।

144

पाँचवीं चरण

→ संयुक्त वृद्धतर राजस्थान

वृद्ध राजस्थान + मत्स्य संघ

14
1
18

↳ मत्स्य संघ के विलय के लिए एक जांच समिति का गठन किया गया था

↳ सदस्य - शंकरराव देव (अध्यक्ष)

उभयपाल

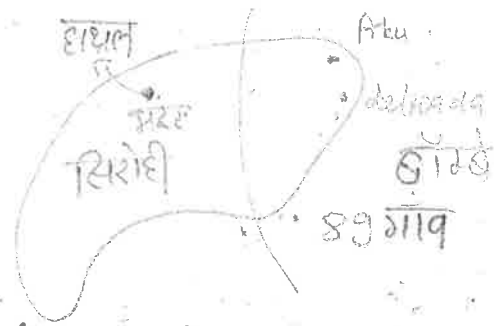
R.K. सिद्धवा

↳ इस समिति की सिफारिश के आधार पर

15 May 1949 ई. को मत्स्य संघ का विलय किया गया था।

→ शोभा राम कुमलवत को हिरालाल शास्त्री मंत्री मण्डल में शामिल कर लिया गया।

छठ चरण



- सिरोही रियासत का विभाजन कर दिया गया था।
- आबू व फेलवाड़ा सहित 89 गाँव छाँम्बे में मिला दिए गए थे तथा शेष सिरोही राजस्थान को दे दिया गया था। इसमें गोकुलभाई भारद्वाज का गाँव हाथल भी शामिल था।
- इस अनुचित विलय पर वल्लभ भाई पटेल का जवाब था कि -
"राजस्थान वालों को गोकुलभाई चाहिए था तथा वह हमने दे दिया"

→ 26 Jun 1950 ई को हमारे प्रदेश का नाम राजस्थान रखा गया।

→ हीरालाल शास्त्री राजस्थान के 1st मनोनीत मुख्यमंत्री बनाए गए।

सातवा चरण

→ राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों के आधार पर

→ 1. आबू व देलवाड़ा राजस्थान में मिलाए गए

1 NOV

2. अजमेर-मेरवाड़ा राजस्थान में मिलाया गया

1956

3. मध्यप्रदेश का सुनेल तप्पा राजस्थान में मिलाया गया

4. राजस्थान का सियोज मध्यप्रदेश में मिला दिया गया।

→ 1 NOV 1956 ई. को राजस्थान का एकीकरण पूरा हुआ
इस समय मोहनलाल सुखाड़िया राजस्थान के
मुख्यमंत्री थे।

→ आबू, देलवाड़ा के विलय के लिए मूनि जिन विजय सूरि
समिति बनाई गई थी।

इतिहासकार दशरथ शर्मा भी इस समिति के सदस्य थे।

राजस्थान का इतिहास लिखने

→ पहले अजमेर-मेरवाड़ा एड चीफ इमीश्वरी था तथा
यहाँ 30 सदस्यों की एड चारस सभा (विधानसभा) होती थी।
हरिभाऊ इपाध्याय अजमेर-मेरवाड़ा के मुख्यमंत्री थे।

→ उन्होंने अजमेर-मेरवाड़ा के राजस्थान में विलय
का विरोध किया था।

अजमेर राजस्थान का (26) वाँ जिला था

→ अजमेर तथा जयपुर में राजधानी को लेकर विवाद था अतः एक जांच समिति का गठन किया गया

↳ सदस्य - अत्यन्तारायण राव (अध्यक्ष)

V. विश्वनाथन

B.K. गुप्ता

↳ इस समिति की सिफारिश के आधार पर

↳ 1. राजधानी - जयपुर

2. राजस्व विभाग - अजमेर

3. शिक्षा विभाग - बीकानेर

4. कृषि विभाग - भरतपुर

5. वन एवं सहकारी विभाग - डोरा

6. खनन विभाग - उदयपुर

→ राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिश के आधार पर (7)वें [1956] संविधान संशोधन द्वारा राजपुमुख का पद समाप्त कर दिया गया।

— ^श राज्यापाल - सरदार गुरुमुख निहाल सिंह

→ 26 वें संविधान संशोधन 1971 द्वारा राज्यों के प्रीवीपर्स समाप्त कर दिए गए थे [इन्दिरा गांधी]

↳ मुख्य प्रीवीपर्स - जयपुर - 18 लाख

जोधपुर - 17.5 लाख, बीकानेर - 12 लाख

→ 1 Nov. 2000 ई. का मध्य प्रदेश का विभाजन कर छत्तीसगढ़ तथा राज्य बनाया गया। अतः इस दिन राजस्थान भारत का सबसे बड़ा राज्य बन गया था।

• शोभाराम कुमावत

- ↳ भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान उन्होंने अपनी कुबालत छोड़ दी थी।
- इसी आंदोलन के दौरान गांधीजी की भूख हड़ताल के समर्थन में उन्होंने 13 दिन का उपवास रखा था।

• अजमेर में राष्ट्रिय आंदोलन

- ↳ 1888 ई. के कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में गोपीचन्द्र माधुर तथा अमृत लाल ने भाग लिया था।
- असहयोग आंदोलन के दौरान गौरीशंकर के नेतृत्व में अजमेर में विदेशी वस्त्रों की होली जलाई गई थी।
- बाल कृष्ण चौल ने अजमेर जेल में भूख हड़ताल की थी।
- पुतुशचन्द ने गीतों के माध्यम से स्वतंत्रता सेनानियों को प्रोत्साहित किया था।

डजमैर काँग्रेस समिति के सदस्य

↳ हरविलास शारदा (अध्यक्ष)

शमशोपाल

फतेहचन्द



Springboard
ACADEMY

✧ समाचार पत्र ✧

1849

1864

1866

1866

1869

1890

Imp

1. मजहसूल सरूर - 1849, भरतपुर

↳ द्विभाषी (हिन्दी + उर्दू)

→ Rāj. का 1st समाचार पत्र

2. माशवाद गजट 1866

माशवाद राज्य द्वारा प्रकाशित

3. जोधपुर गवर्नमेंट गजट 1864

4. मरूधर मिश्र 1866

5. उदयपुर गजट - 1869, उदयपुर

↳ 1879 - नाम बदला - महाराणा सज्जन सिंह ने

↳ नाम - सज्जन कीर्ति सुधाकर
रखा

→ राजस्थान का 1st साप्ताहिक समाचार पत्र

6. सर्वहित - 1890, बूंदी

↳ इसमें मूल संख्या दर्ज की जाती थी।

Printing no.

7. राजपूताना अखबार / राजतुल तालीम [1856
जयपुर
कुन्द्यालाल]
↳ द्विभाषी - हिंदी + उर्दू

8. राजपूताना राजट [1885
अजमेर
मौलवी मुराद अली वीमार
↳ सरकारी आलोचना के कारण
इन्हें गिरफ्तार किया गया था
→ मोती बेगम इस समाचार पत्र से संबंधित थी]

9. राजपूताना हेराल्ड [1885
अजमेर
हनुमान सिंह
↳ इस समाचार पत्र में A.G.G. पाउलेट तथा जोधपुर के
प्रधानमंत्री सर प्रताप की आलोचना की थी ।
यह अंग्रेजी का पहला समाचार पत्र था जिसमें राजस्थान
में राजस्थान में राजनीतिक चेतना का संचार किया था]

10. पेश हिर्तेशी [1882
अजमेर
मुन्नालाल वर्मा
जन्मा मुन्ना राठी हू देश का सिक्की हू
हिर्तेशी]
↳ यह आर्थिक समाज की विचारधारा का समाचार पत्र था

11. राजस्थान समाचार [1889
अजमेर
मुंशी समर्थदान चारण]

- यह पहले साप्ताहिक था लेकिन बाद में दैनिक हो गया था।
- पहले आर्थ समाज की खबरें प्रकाशित करता था लेकिन बाद में राजनीति की खबरें भी प्रकाशित करता था।
- 1896 ई. में अंग्रेजों ने आलावाड़ के राजा आलिम सिंह को हरा दिया था, अतः इस समाचार पत्र ने इसी आलोचना की थी।

12. आर्थ मार्तंड [1923
अजमेर
राम सहाय शर्मा]

- विधवा विवाह के लिए निःशुल्क विज्ञापन द्वापें थे

- * 13. व्यागभूमि [1927
अजमेर
हरिभाऊ उपाध्याय
+
श्रीमानन्द रावस्त]

- यह गांधीवादी विचारधारा को प्रोत्साहन देता था
- 64 में से 16 पृष्ठ महिलाओं से सम्बंधित थे

14. राजस्थान देसरी [1920
वर्ष]

- इसका नामकरण देसरीसिंह बाख्ठ के नाम पर दिया गया था
- जमनालाल बाजाज इसे वित्तीय सहायता प्रदान करते थे
- सम्पादक - विजयसिंह पथिक
editor
- उपसम्पादक - रामनारायण चौधरी
Subeditor
- कालान्तर में इसे अजमेर से प्रकाशित किया गया
- 1922 ई. में इसे बंद कर दिया गया था

15. नवीन राजस्थान [1922
अजमेर
विजयसिंह पथिक (प्रसूत)]

- सम्पादक - विश्वेश्वरसिंह वर्मा
- यह राजस्थान सेवा संघ का मुख पत्र था
- इसने जिर्जोलिया, बेंगल, भांदोलन की खबरें प्रकाशित की थीं
तथा एडी
विजयसिंह पथिक की जिम्मेदारी
- स्तोत्र- यश वैभव की चाह नहीं,
चाह नहीं जीवन रहे न रहे ।
चाह है तो, वस, यह है ।
जग में स्वेच्छाचार कमन न रहे ॥
- 1923 ई. में इसका नाम बदलकर नरुण राजस्थान कर दिया था

16.

तरुण राजस्थान
(युवा)

1923

अजमेर

रामनारायण चौधरी

+
शोभालाल गुप्त

→ बूंदी तथा नीमूचणा आंदोलन की खबरें प्रकाशित दि गई थी

[कौट - नयनूराम शर्मा]

[वरौली - मदनसिंह]

इस समाचार पत्र से जुड़े हुए थे
(अबरे जाते थे)

→ जयनारायण व्यास ने इसे ब्यावर से प्रकाशित किया था

इसका English Version

17.

Young Rajasthan

1929

अजमेर

रामनारायण चौधरी

+
शोभालाल गुप्त

Springb
ard
ACADEMY